राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक : 5] नवम् विधान सभा के पंचम सत्र का प्रथम दिवस [संख्या : 1

मंगलवार
10 सितम्बर, 1991

राजस्थान विधान सभा की बैठक पूर्वाह्न 11.00 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री हरिशंकर भाभड़ा, अध्यक्ष, पदासीन)

श्री अध्यक्ष : प्रश्न। श्रीमती उजला अरोड़ा।

श्रीमती उजला अरोड़ा (जयपुर ग्रामीण) : प्रश्न संख्या 1.

प्रश्नकाल का निलम्बन

श्री केदारनाथ (गंगानगर) : अध्यक्ष जी, आप से निवेदन किया है कि रूल 306 को इन्वोक किया जाय क्योंकि आज का यह बड़ा सोलेमन आकेजन है। हम हमारे देश के पूर्व प्रधान मंत्री के प्रति, जिनकी आज मौजूदा सरकार सेण्टर में है कण्डोलेंस पेश कर रहे हैं और माननीय डांगे जी भी, जो नेशनल फिगर थे। पूर्व में भी यह ट्रेडीशन है। जब माननीय चौधरी चरण सिंह जी का देहान्त हुआ था, अध्यक्ष जी, उस समय भी क्वेश्चन आवर को हमने सस्पेण्ड किया था। सालेमन आकेजन है, हालांकि मैं क्वेश्चन आवर की सैंक्टिटी को मानता हूं, उसके महत्व को भी मानता हूं, लेकिन क्योंकि यह सेशन का पहला दिन है इसलिए मेरा आप से निवेदन है कि रूल 306 को इन्वोक करके आज के क्वेश्चन आवर को सस्पेण्ड किया जाय।

श्री अध्यक्ष : मैं सस्पेण्ड करता हूं। शोकाभिव्यक्ति।

शोकाभिव्यक्ति एवं श्रद्धांजलि

सर्वश्री राजीव गांधी, महाराव भीम सिंह, श्रीपाद अमृत डांगे, सी. अच्युत मेनन, लक्ष्मीनारायण किसान, रामधन, दिनेश राय डांगी, फूलचन्द जैन, किशन लाल शाह, फूलचन्द बाफना एवं श्रीमती आनन्दी देवी जेलिया के निधन पर

श्री भैरोंसिंह शेखावत (मुख्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, पूर्व प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी, राजस्थान के पूर्व उप राज प्रमुख महाराव भीमसिंह, वयोवृद्ध कम्युनिस्ट नेता तथा स्वतन्त्रता सेनानी श्री श्रीपाद अमृत डांगे, केरल के पूर्व मुख्य मन्त्री श्री सी. अच्युत मेनन तथा आठवीं विधान सभा के सदस्य श्री लक्ष्मीनारायण किसान,

Page No.2

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

श्री रामधन, तीसरी, पांचवीं और सातवीं विधान सभा के सदस्य श्री दिनेश राय डांगी, तीसरी और पांचवीं विधान सभा के सदस्य श्री फूलचन्द जैन, पहली, दूसरी और चौथी विधान सभा के सदस्य श्री किशन लाल शाह, पहली और चौथी विधान सभा के सदस्य श्री फूलचन्द बाफना एवं दूसरी विधान सभा की सदस्या श्रीमती आनन्दी देवी जेलिया के प्रति मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके शोक सन्तप्त परिवार को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

अध्यक्ष महोदय, श्री राजीव गांधी के प्रति किन शब्दों में श्रद्धांजलि अर्पित की जाए, उन शब्दों और उस भावना की किस प्रकार से अभिव्यक्ति की जाय, यह एक बहुत बड़ी समस्या है। कोई आदमी यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि चुनाव के मध्य श्री राजीव गांधी की इस प्रकार से हत्या कर दी जायेगी और वे हमारे बीच में नहीं रहेंगे। जिस रूप में हत्या की गयी उस हत्या की किस प्रकार से निन्दा की जाय, किस प्रकार के कठोर शब्दों का प्रयोग किया जाय, मैं समझता हूं उसके लिए भी शब्दों का चयन करना बहुत कठिन है। श्री राजीव गांधी जब राजनीति में आये उस समय उनकी उम्र बहुत कम थी। लोगों को इस बात की कल्पना नहीं थी लोगों को यह विश्वास भी नहीं हो रहा था कि उस समय देश में जिस प्रकार की विकट परिस्थितियां थीं उन परिस्थितियों में एक नया युवक किस प्रकार से सफल होगा और देश की बागडोर किस प्रकार से चलायेगा। लेकिन मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूं कि उन का समय-समय पर जिस प्रकार से अनुभव बढ़ा, देश और विदेश में उन्होंने ख्याति प्राप्ति की, अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपने मित्र बनाये, भारत का सही प्रकार से प्रतिनिधित्व किया और भारत अग्रणी देशों में पहुँचे इस बात की मन से उन्होंने चेष्टा की। यह भी सही बात है कि भारत के विरुद्ध कई देशों में जिस प्रकार की अच्छी भावनाएं नहीं हैं, दुर्भावनाएं हैं उन दुर्भावनाओं को बदलने की भी चेष्टा की। नान अलाइण्ड कण्ट्रीज को एक मजबूत संगठन के रूप में लाकर एक तीसरी शक्ति के रूप में उभारने की चेष्टा की ताकि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बैलेन्स आफ पावर को किसी प्रकार से मेन्टेन किया जा सके।

मैं यह भी कहना चाहूंगा कि उनके शासन काल में कई बार देश के ऊपर कई प्रकार के संकट आये और देश में भी इस प्रकार के कई संकट उत्पन्न हुए, लेकिन अपने शासन के प्रारम्भिक काल में देश की समस्याओं का समाधान करने के लिए उन्होंने कन्फ्रण्टेशन का तरीका छोड़कर समझौते का तरीका अपनाया और उसके परिणामस्वरूप पंजाब की समस्या का समाधान करने के लिए लोंगोवाल समझौता किया, असम की समस्या का समाधान करने के लिए उन्होंने असम समझौता किया और इसी प्रकार से कन्फ्रण्टेशन को अवाइड करने के लिए समझौते कर समस्याओं का निदान भी किया और समस्याओं का समाधान करने की कोशिश की। जहां तक पाकिस्तान से हमारे सम्बन्ध बनाये रखने का प्रश्न था भारत की अखण्डता को ध्यान में रखते हुए उन्होंने पाकिस्तान के

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

साथ भी उसी प्रकार का व्यवहार रखा जिसमें किसी प्रकार की कटुता नहीं आये और साथ ही देश की एकता और अखण्डता पर किसी प्रकार का खतरा उत्पन्न नही हो। लंका में भी इस प्रकार की समस्या पैदा हुई थी। उस समस्या का समाधान करने के लिए भी उन्होंने स्पष्ट नीति के आधार पर अपनी भरपूर चेष्टा की। मैं ऐसा समझता हूं कि एक छोटे-से मुल्क मालद्वीप पर जब कुछ आक्रमणकारियों ने उसकी स्वतन्त्रता का हनन करने की चेष्टा की, उस समय सदन को याद है कि एक डिप्लोमेट के नाते और एक राष्ट्र के सर्वोच्च व्यक्ति के नेता जिस से उन्होंने निर्णय लेकर सेना को वहां भेजा, यह उसी का परिणाम था कि हमने उस राष्ट्र की स्वतन्त्रता को सही प्रकार से बनाये रखा।

ये सब कुछ कारण हैं जिनके कारण उस व्यक्ति की देश और विदेश में सर्वत्र प्रशंसा रही, उनके बहुत भारी प्रशंसक रहे। प्रशंसक की यह बात मैं नही कहता, मैं इतना ही कह सकता हूं कि देश में आज तक बड़े व्यक्तियों की हत्याएं हुई हैं, बड़े-बड़े व्यक्तियों का दाह संस्कार हुआ है लेकिन पद पर न रहते हुए भी उनके दाह संस्कार के समय सारे राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने आकर उनके सम्मान में अपनी भावनाएं व्यक्त कीं, उनको श्रद्धांजलि दी और उनके परिवार को सांत्वना दी, संसार में बहुत कम व्यक्ति होंगे जिनको इस प्रकार से सम्मान मिला हो।

अध्यक्ष महोदय, मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि राजीव गांधी नये विचारों से ओत-प्रोत थे। वे चाहते थे कि देश में विकास की नयी पद्धति पैदा हो, विकास के लिए एक नई परम्परा कायम हो। इसलिए यही एक पहले प्रधान मन्त्री थे जिन्होंने कोई क्षेत्र ऐसा नहीं छोड़ा होगा चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो, चाहे जल का क्षेत्र हो, चाहे विद्युत का क्षेत्र हो, चाहे उद्योग का क्षेत्र हो, किसी भी प्रकार के क्षेत्र में नयी नीतियां निर्धारित कर उनको लागू करने का उन्होंने बीड़ा उठाया और अधिकांश क्षेत्रों में उन्होंने अपनी नयी नीतियों की घोषणा की।

यह सब कुछ उस व्यक्ति में था, प्रारम्भ में ऐसा नहीं था लेकिन अपने शासन काल में सारी ही जनता में यह विश्वास पैदा किया कि व्यक्ति जो मन में विचारता है, उसको करने की इच्छा रखता है तथा जो वाणी से निकालता है उसको कार्य रूप में परिणीत करने की क्षमता रखता है, इसी प्रकार का विश्वास उन्होंने पैदा किया। कोई इन्सान आज के दिन ऐसा नहीं है जो टोटली परफेक्ट हो। मैं समझता हूं कि भगवान के सिवाय कोई व्यक्ति नहीं हो सकता है। कमियां हो सकती है लेकिन आदमी कमियों को सुधारने की चेष्टा करे और गुणों के आधार पर आगे बढ़ने की चेष्टा करे तो यह संसार तो इस प्रकार का है कि जिसमें कमियों को लोग भूल जाते हैं और गुणों को याद करते हैं। इस प्रकार की प्रवृत्तियों से उन्होंने सारे हिन्दुस्तान के अन्दर अपना शासन चलाया।

मैं, अध्यक्ष महोदय, यह कहना चाहता हूं कि प्रत्यक्ष रूप में काफी देर तक बात-

Page No.4

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

चीत करने का मौका केवल मुझे दो बार मिला और वह भी जब वह प्रधान मन्त्री नहीं थे। बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी और विश्व हिन्दू परिषद में जब आपस में विचार हो रहा था, उस विचार के समय में मैंने दो बार उनसे बात की थी। मैं उस समय तक ऐसा समझता था कि यह व्यक्ति बहुत रिजिड है, कम बोलते हैं, कम बोलने के साथ-साथ यह स्थिति का अपने हिसाब से विश्लेषण करने की चेष्टा करेंगे। लेकिन दोनों बार मेरा अनुभव इस प्रकार का हुआ कि उस आदमी में किसी भी समस्या का समाधान करने के लिए एक ह्यूमर भी उनका एक रास्ता था। कितना ही किसी प्रकार का टेंशन हो, उस टेंशन को डिफ्यूज करने के लिए और असली बात समझने के लिए यदि सीधेपन से कोई बात सामने नहीं आती हो तो, यह भी इनका एक गुण था। मैं दो बार उनसे मिला, सारी स्थिति उनके सामने रखी और मैं यह कह सकता हूं कि दोनों बार उन्होंने इस बात को एप्रिशियेट किया कि जिस गति से यह सारी कार्यवाही चल रही है उसमें किसी प्रकार की बाधा उपस्थित नहीं हो और बाधा उपस्थित होती है तो मैं सहयोग करने के लिए तैयार हूं। यह सब कुछ बातें चलती रहीं। उनसे दो बार व्यक्तिगत सम्पर्क करने के कारण मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि इस व्यक्ति से बार-बार मिलकर यदि अन्य समस्याओं के सम्बन्ध में भी विचार विमर्श किया जाय, चिन्तन किया जाय तो मैं घाटे में नहीं रहूंगा बल्कि निश्चित रूप से कोई न कोई ऐसा मार्ग भी हम अपना सकेंगे जिस मार्ग के आधार पर हम देश और प्रदेश का विकास कर सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय, यह देश का बड़ा दुर्भाग्य है कि बेटा गया और मां गई। एक परिवार के दो व्यक्तियों की शीर्षस्थ पद पर रहते हुए दोनों की हत्यायें हुई। यह हमारे लिए तो बहुत बड़ा कलंक है, लोकतंत्र के लिए कलंक है और आज की इस व्यवस्था के लिए बहुत बड़ा कलंक है लेकिन उस परिवार के प्रति मैं श्रद्धा अर्पित करना चाहूंगा। मां चली गई तो बेटे की चिन्ता नहीं। मां और बेटे ने जिस प्रकार से काम किया, जैसा मैंने कहा कि कई कमियां हो सकती हैं लेकिन देश को सामने रखकर देश का अनादर हो, देश में किसी भी प्रकार की भ्रान्ति उत्पन्न हो, देश बदनाम हो इस प्रकार की कभी चेष्टा नहीं की। नीतियों में अन्तर हो सकता है, कार्यक्रमों में अन्तर हो सकता है, हमारा भी उनसे मतभेद रहा है, हमारी पार्टी का भी मतभेद रहा है, सिद्धान्त, नीतियों, उद्देश्य और कार्यक्रमों के आधार पर हमारा मतभेद रहा है लेकिन लोकतन्त्र में यदि मतभेद नहीं हो तो लोकतन्त्र जीवित नहीं रह सकता है, इस सिद्धान्त को राजीव गांधी जानते थे कि विरोध जब तक नहीं होगा तब तक मेरी असलियत का या मेरी नीतियों की असलियत का, मेरे उद्देश्य और कार्यक्रमों का असलियत का किसी प्रकार से पता नहीं लगेगा। इस आधार पर उन्होंने इस लोकतन्त्र के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते हुए नहीं बल्कि आस्था के रूप में काम करते हुए जनता को प्रभावित किया।

अध्यक्ष महोदय, जैसा मैंने कहा कि राजीव गांधी को किन शब्दों में श्रद्धांजलि अर्पित की जाय। मै ऐसा समझता हूं कि मेरे जैसे व्यक्ति के सामने अपने से कम उम्र वाले व्यक्ति के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

करना यह कठिन कार्य है, बराबर के हों तो विशेष कोई आपत्ति नहीं है लेकिन बिल्कुल कम उम्र के व्यक्ति के प्रति यह सदन श्रद्धांजलि अर्पित करेगा और श्रद्धांजलि का प्रस्ताव मैं प्रस्तुत कर रहा हूं। मुझे इसकी हार्दिक रूप से वेदना है लेकिन जो होनी है वह हुई है, वह आपके बस की नहीं है, मेरे बस की नहीं है। वह जिस ढंग से हमारे हाथ से छीनकर गए हैं उससे हम उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं, उनके परिवार के प्रति सहानुभूति प्रगट कर सकते हैं और ईश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। लेकिन मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि हम सब लोग मिलकर एक बात का प्रयत्न करें कि यह सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी कि लोकतंत्र के अन्दर किसी भी प्रकार का मतभेद हो हत्या उसका समाधान नहीं है और हत्या की राजनीति यदि लोकतन्त्र में आ गई तो लोकतन्त्र के प्रति आस्था में बहुत बड़ी कमी आयेगी, इस दृष्टि से मैं श्री राजीव गांधी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, श्री डांगे का भी इन्हीं दिनों स्वर्गवास हुआ। एक व्यक्ति जिसका पूरा जीवन उठाकर देखें तो मैं ऐसा समझता हूं कि जन्म से लेकर मरे उस समय तक उस व्यक्ति ने संघर्ष किया। चाहे आजादी के समय उन्होंने संघर्ष किया हो, चाहे आजादी के बाद संघर्ष किया हो लेकिन हिन्दुस्तान में ऐसा उदाहरण नहीं मिलेगा, जिस व्यक्ति ने छात्र जीवन से लेकर जब तक उनकी मृत्यु हुई उस समय तक संघर्ष किया है। आप बातचीत करें तो ऐसा नहीं लगता कि यह व्यक्ति संघर्षशील है, आप बात-चीत करें तो ऐसा पता नहीं लगता कि इस व्यक्ति में वेदना नहीं है, आप बात-चीत करें तो ऐसा पता नहीं लगता कि इस व्यक्ति में माधुर्य नहीं है लेकिन अगर आप बातचीत करें तो इस बात का पता निश्चित रूप से लगेगा कि यह दृढ़ है और दृढ़ता के आधार पर यह किसी के सामने झुकने को तैयार नहीं हैं। यह अंग्रेजों के सामने नहीं झुके, आजादी के बाद सरकार के सामने भी नहीं झुके। गरीब और मजदूरों का मिशन उन्होंने जिस ढंग से लिया उसके आधार पर मैं कह सकता हूं कि उन जैसा व्यक्ति गरीबों की समस्याओं में या मजदूरों की समस्याओं कोई व्यक्ति आत्मसात होकर उनकी भावनाओं को और व्यथाओं को व्यक्त करता है। डांगे जिस समय बोलते थे उस समय लगता था कि डांगे कोई नेता नहीं बोल रहा है हिन्दुस्तान का गरीब बोल रहा है, डांगे कोई नेता नहीं बोल रहा है, हिन्दुस्तान का एक मजदूर बोल रहा है, मजदूर की वेदना बोल रही है। उस प्रकार का व्यक्तित्व हमारे बीच में से गया है। वह एक आदर्श पुरुष थे आपके और उनके विचार नहीं मिलते हों लेकिन मैं कई बार उनसे मिला हूं, एक बार नहीं। कई बार उनसे मिला हूं। और मिलते समय उस समय केवल दार्शनिक बातें वह व्यक्ति करता था। मेरी समझ में नहीं आता था कि इस प्रकार के दार्शनिक विचारों वाला व्यक्ति अपने दर्शनशास्त्र को एक्शन में किस प्रकार से कन्वर्ट कर रहा है लेकिन उदाहरण के

Page No.6

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

रूप में मैंने देखा है कि जो व्यक्ति दार्शनिक विचारधारा रख रहा है वही व्यक्ति दर्शन को कार्य रूप में परिणीत करने की चेष्टा में लगा हुआ है। इस प्रकार का व्यक्ति हमारे बीच में से गया है। एक उनका स्थान खाली हुआ है। खाली स्थान की पूर्ति करना, मैं तो समझता हूं कि आज के युग में कोई कमी तो नहीं रहती है लेकिन जिस प्रकार का व्यक्तित्व हमारे सामने रख कर गए है उसकी पूर्ति करना यह आसान नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, इसी के साथ-साथ श्री अच्युत मेनन जो केरल के पूर्व मुख्य मंत्री थे। श्री अच्युत मेनन का भी इसी प्रकार सारा जीवन मैं यह कह सकता हूं कि एक पार्टी की सेवा में नहीं गया देश की सेवा में गया। देश के सामने पार्टी कोई महत्व नहीं रखती है। हम सब देश की दृष्टि से एक हैं। श्री अच्युत मेनन उन व्यक्तियों में से थे जो प्रारम्भ से लेकर अन्त तक संघर्ष करते रहे और देश की सेवा करने का अपना बिन्दु मानकर उन्होंने शासन किया और शासन में इस प्रकार का परिवर्तन किया, इस प्रकार की नई नीतियां लाये, जो नई नीतियां उनके नाम से आज भी केरल में परिचित हैं। मैं समझता हूं कि इस प्रकार का व्यक्ति हमारे बीच में से गया हमें बहुत दुःख है। उनके प्रति मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, श्री लक्ष्मीनारायणजी किसान जो इसी विधान सभा के सदस्य थे। बच्चा-बच्चा जानता है, वैसे वह मेरे पड़ौस गांव के थे। मैं उनको अच्छी तरह से जानता था। किस प्रकार से यह व्यक्ति आगे बढ़ा है। किसान जो नाम ही ऐसा नहीं है वास्तव में किसान का काम करने वाला व्यक्ति और आखिर में जब उनकी मृत्यु हुई, आप ताज्जुब करेंगे मैं जब अपने गांव से वापस आ रहा था, तो 2–3 आदमियों को उन्होंने सड़क पर खड़ा करवा दिया और केवल इसलिए खड़ा करवा दिया कि चीफ मिनिस्टर जा रहे हैं इधर से इसको रोको। 2–3 आदमी सामने खड़े हो गए। मुझे भी चिन्ता हुई कि कहीं एक्सीडेंट न हो जाय। मैंने गाड़ी रोकी। मैंने कहा कि क्यों खड़े हैं? तो इन्होंने कहा कि श्री लक्ष्मीनारायण जी किसान ने मन्दिर बनवाया है उस मन्दिर में जाकर दर्शन करके जायं। मन्दिर बना उस समय से लेकर, मैं उस मन्दिर के निर्माण कार्य को देखता आया हूं। मुझे इस बात की खुशी है कि एक एम. एल. ए. ने, जिसने पूरी तनख्वाह, अपने पूरे साधन, पूरी आर्थिक व्यवस्था उस मन्दिर के निर्माण में लगा दी। और जिस दिन मन्दिर का निर्माण पूरा हुआ उसी दिन उनका स्वर्गवास हो गया। उस व्यक्ति ने कभी अपने लिए कुछ कमाया नहीं, अपने लिए कुछ बचाया नहीं। जो कुछ कमाया और बचाया मन्दिर के निर्माण में लगाकर वह अपनी स्थिति और अपनी याद उस क्षेत्र के लिए पूरी तरह से ताजा छोड़कर गए हैं। जब भी कोई मन्दिर के दर्शन करने जायेगा लक्ष्मीनारायण किसान का नाम उनकी जुबान पर और उनके मस्तिष्क में आयेगा।

Page No.7

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से रामधन जी इस सदन के सदस्य रहे हैं। सीधे-साधे सदस्य थे। विधान सभा में। अपने विधान सभा क्षेत्र में काफी लोकप्रिय थे और लोकप्रिय होने के नाते आप अन्दाजा लगा लें कहां तक और किस सीमा तक एक आदमी किसानों में और गांवों में काम कर, घूम कर इन समस्याओं के बारे में चिन्तन कर सकता है लेकिन ठेठ किसान होकर और किसानों की समस्याओं से जुझने के वह आदी रहे हैं। मैं उनके प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर हूं।

अध्यक्ष महोदय, श्री दिनेश राय डांगी राज्य में मंत्रि मण्डल के सदस्य भी रहे हैं, शिड्यूल्ड कास्ट के नेता भी रहे हैं। मिलनसार भी रहे, कई वर्षों तक वह इस सदन के सदस्य भी रहे, विधान सभा की कार्यवाही में भाग की लेते रहे। मैं ऐसा समझता हूं कि अचानक उनकी मृत्यु होना यह हमारे सबके लिए दुखदायी है।

मैं, अध्यक्ष महोदय, इसी के साथ निवेदन करना चाहूंगा कि फूल चन्द जी जैन गांधी वादी विचारधारा का व्यक्ति, सादा जीवन और मीठी भाषा। फूल चन्द जी जैन से अधिकांश व्यक्ति परिचित होंगे वह रचनात्मक कार्यक्रम में विश्वास रखते थे। राजनैतिक क्षेत्र में चाहे किसी भी दल में हो उनका सिद्धान्त केवल रचनात्मक काम करने का था। चाहे गरीबों की सेवा करने का काम हो, चाहे गांवों के विकास का काम हो चाहे खादी ग्रामोद्योग की स्थापना के अन्दर उनका कार्यक्रम में किस प्रकार से योगदान हो सकता है उस प्रकार का योगदान हो। इन सब बातों में फूल चन्द जी राजनैतिक क्षेत्र में रचनात्मक कार्य की एक छाप छोड़ने वाला व्यक्ति, यह हमारे बीच से उठकर चला गया यह भी मुझे दुख है।

राजस्थान विधान सभा के एक सदस्य, जिनको अधिकांश माननीय सदस्य नहीं जानते होंगे किशन लाल शाह, यह पहली विधान सभा के सदस्य थे। एक जुझारु व्यक्ति थे। उनके लम्बे-लम्बे बाल लेकिन विधान सभा में सरकारी पक्ष में होते हुए यदि सरकार के खिलाफ बोलने लग गए तो उस समय के सरकारी पक्ष के नेता किशन लाल शाह को चुप कर दें इस तरह की बात नहीं थी। लेकिन उनमें एक विशेषता थी जहां उनको यह अहसास हुआ कि मैं जो कुछ कह रहा हूं वह सरकार की मंशा है, मैं जो कुछ कह रहा हूं सरकार उसको मानने वाली है। तो एक बार अपनी वाणी से निकलने के बाद मैंने ऐसे व्यक्ति बहुत कम देखे हैं कि गलत बात भी निकल जाए उसको तुरन्त खडे होकर स्वीकार करने को तैयार हो जाए। लेकिन कोई बात ऐसी नहीं होती थी जिस बात को उन्होंने यहां उठाया नहीं हो, सरकार से उसका समाधान नहीं कराया हो। इस प्रकार का जुझारू व्यक्तित्व केवल विधान सभा में ही जुझारू नहीं वह अपने क्षेत्र में भी जुझारू है। अगर किसी की समस्या उनके पास आ जाए तो वो व्यक्ति इस बात से डर या संकोच करने वाला नहीं था कि मैं विधान सभा का सदस्य हूं नहीं, मैं इस मसले को किस प्रकार से उठाऊं लेकिन मसले को उठाया। चाहे सरकार के पास आकर उठाया चाहे

Page No.8

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

और कहीं उठा कर गए। मैं समझता हूं मेरी उस व्यक्ति से मित्रता भी आखिर के वर्षों में बहुत ज्यादा हो गई। जयपुर आते तो हर समय बिना मिले नहीं जाते और मैं भी उनके गांव नावां में जाता तो उनके यहां ठहरे बिना मैं नहीं आता। दोनों का काफी मित्रता का सम्पर्क रहा है। उस व्यक्तिगत मित्रता के नाते उनका निधन मेरे लिए व्यक्तिगत शोक के बराबर है।

इसी तरह से अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहूंगा श्रीमती आनन्दी देवी जेलिया, यह भी विधान सभा की सदस्या रही। बहुत गरीब परिवार से थी। पहले जेलिया जी सदस्य थे उसके बाद में उनकी पत्नि सदस्या बनी। गरीब परिवार से थी, यह लोकतन्त्र की देन है कि ऐसे गरीब भी विधान सभा में आए और उन लोगों ने आकर अपने क्षेत्र की और राजस्थान के विकास की किस प्रकार से चिन्ता की जा सकती है, उस चिन्ता की बात की।

अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि पिछले दिनों कोटा के महाराव भीमसिंह जी का भी देहान्त हुआ। यह पहले उपराज प्रमुख थे। अध्यक्ष महोदय, उस व्यक्ति के बारे में जितना कोई जानता है, निश्चित रूप से जानते होंगे कि इस प्रकार का सादा जीवन और सादा विचार वाला राजा बहुत ही कम हुए हैं। आप यदि मिलेंगे तो इस बात का आभास नहीं होगा कि मैं किसी राजा से बात कर रहा हूं, आपको यह आभास नहीं होगा कि मैं किसी भूतपूर्व राजा से बात कर रहा हूं। याद करें तो कहीं इस बात की अभिव्यक्ति उनके मुंह से नहीं आती कि मैं कोई भूतपूर्व रियासत का मालिक था या मैं आज भी भूतपूर्व राजा हूं। एक शुद्ध विचार और शुद्ध चरित्र जिस प्रकार का ज्ञान कोई भी व्यक्ति जाएगा तो बातचीत करने में कोई न कोई विशेष बात वो कहते थे ताकि वह व्यक्ति अपने जीवन में उन बातों को उतारने की चेष्टा करे। पिछले दिनों बहुत बीमार रहे। बीमारी के समय भी जो लोग उन से मिले, उस समय भी कुछ इस प्रकार की स्थितियां हुई जिनके बारे में मैं इतना ही कह सकता हूं कि इलाज कराने में भी कोई कसर नहीं रही, इलाज भी उनका खूब कराया गया। लेकिन एक बात जो उन्होंने अपने मन में बना रखी थी, हिन्दुस्तान में उनकी ख्याति और संसार में उनकी ख्याति शूटिंग के मामले में, वह चैम्पियन थे लेकिन कोई भी आदमी अगर इस विषय में जाकर उनसे बात करता तो किस प्रकार से हम इसमें पारंगत हो सकते हैं उस पारंगत का ज्ञान देने में उन्होंने कोई कसर नहीं रखी। अध्यक्ष महोदय, ऐसे बहुत से व्यक्ति हैं जिनमें ज्ञान है लेकिन ज्ञान दूसरों को देना नहीं चाहते और उन्होंने अपना ज्ञान सभी तरह से जो व्यक्ति उनके पास गया, यू. एन. ओ. के भी एक बार जनरल असेम्बली में सदस्य बनकर गए थे। सब प्रकार से प्रख्यात व्यक्ति हमारे बीच से उठकर चले गए। मैं उनके प्रति भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

जिन स्वर्गीय व्यक्तियों के नाम मैंने अपने प्रस्ताव में रखे हैं उन सबके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। भगवान से

Page No.9

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

प्रार्थना करता हूं कि उनको शांति प्रदान करें और साथ ही भगवान से यह भी प्रार्थना करता हूं कि उनके शोक सन्तप्त परिवार को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

श्री अध्यक्ष : बाफना जी का भी बोलिएगा।

श्री भैरोंसिंह शेखावत : बोल दिया था।

श्री हरिदेव जोशी (नेता, प्रतिपक्ष) : अध्यक्ष महोदय, मेरे लिए श्री राजीव गांधी के बारे में कहना बड़ा मुश्किल है। मैं पूर्णतया सहमत हूं सदन के नेता से कि राजीव गांधी भावी भारत के स्वप्न दृष्टा थे। प्रधान मन्त्री बनने के बाद उन्होंने भारत को इक्कीस वीं सदी में ले जाने की बात कही थी। कुछ लोगों ने उसको समझा था। मगर जब उनके कार्य को देखा तो अनुभव किया कि दरअसल इक्कीस वीं सदी में भारत कैसा होगा उस स्वप्न को देखा करते थे। जैसा कि अभी कहा गया है मतभेद हो सकते हैं, राजनीति में, लोकतन्त्र में भी मतभेद हो सकते हैं मगर हिंसा जंगल का राज है, हिंसा सभ्य मनुष्यों का संसार में कोई साधन नहीं बन सकता। राजनीति में मतभेद हो सकते हैं, मन भेद हो सकते हैं और बहुत बड़ी कटुता भी हो सकती है। मगर अन्ततोगत्वा राजनीति में मनो-मालिन्य कबूल करने के लिए, मतभेद को दूर करने के लिये विचार विनिमय ही एक साधन है इसके सिवाय दूसरा कोई मार्ग नहीं है। दुर्भाग्यवश आज भी संसार के अन्दर अपने विरोधियों को अपमानित करने अथवा गिराने अथवा मारने की जो वृत्ति है वह पशु वृत्ति के सिवाय और कुछ नहीं कहा जा सकता। राजीव गांधी के जीवन को देखते हैं तो कितने कम अर्से में उन्होंने जो असर छोड़ा है, मैं ऐसा समझता हूं कोई आदमी कितने वर्षों तक किसी बड़े पद के ऊपर रहे और एक थोड़े समय तक रहे जो असर उन्होंने पैदा किया, बहुत कम लोगों ने पैदा किया और आगे भविष्य में भी पैदा कर सकेंगे, इसमें मुझे शंका है।

जैसा कि कहा गया संसार के राष्ट्रों में, न केवल भारत में बल्कि संसार के राष्ट्रों ने जिस प्रकार से इसको लिया, यह इस बात का प्रमाण है कि वे हृदय में चाहे भारत का शासक नहीं देखते थे मगर हृदय में भारत का प्रतिनिधि मानते थे। राजीव गांधी जब अमेरिका गये सबसे पहले उनकी प्रेस कान्फ्रेंस को अमेरिका में भारतीय याद करके गद्गद् हो जाते हैं और कहते हैं कि उस दिन हमारा सिर ऊंचा हो गया था और हमें इतने टेलीफोन उस दिन मिले उतने टेलीफोन हमको कभी भी नहीं मिले। यहां तक कि हमारी बर्थ-डे के ऊपर भी हमको इतने टेलीफोन नहीं मिले जितने टेलीफोन राजीव गांधी की उस प्रेस कान्फ्रेंस के लिए मिले। राजीव गांधी भारत की प्रतिष्ठा को नीचे हरगिज नहीं रखना चाहते थे और बार-बार कहते थे कि संसार में ऐसी शक्तियां हैं जो सेना के बल पर नहीं, दूसरे साधनों से उनको कमजोर करने की कोशिश कर रही है, उन कोशिशों को हमें नाकामयाब करना है। हमारी स्थिति ऐसी होनी चाहिए, संसार के आगे बढ़े हुए देशों के अन्दर

(श्री हरिदेव जोशी)

हमारा भी नाम हो, वह भारत को पिछड़ा हुआ देश कहने में संकोच महसूस करते थे। उनको यह लगता था कि भारत पिछड़ा हुआ देश है या कहते हैं डवलपिंग कण्ट्रीज के अन्दर हिन्दुस्तान का नाम है। यह हमारी कमजोरी है। आजादी के चालीस वर्षों में जो कुछ भी हमने किया वो कम नहीं है मगर उन्होंने जिस रूप से कार्यक्रम बनाए थे विकास के और नीचे गिरे हुए लोगों को ऊंचा उठाने के लिए वैज्ञानिक ढंग से, टेक्निकल ढंग से भारत को ऊंचा उठाने के लिए वह अनुपम था।

इस क्षति की पूर्ति होना असम्भव है। राजीव जी की हत्या एक प्रकार से भारत की आत्मा की हत्या करना है। यह क्षति केवल राजीव जी के परिवार की ही क्षति नहीं है, पूरे भारत की क्षति है, हम सब लोगों की क्षति है और मैं श्री राजीव गांधी की क्षति में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, दुसरे श्री अमृत डांगे, डांगे साहब मजदूर नेता समझे जाते थे। वे अपने आप में एक संस्था थे, वे व्यक्ति नहीं थे वह संस्था थे, विचारक थे, दार्शनिक थे और शायद भारत में सबसे पहले व्यक्ति ऐसे थे जिसने मजदूर आन्दोलन को इतना व्यापक रूप दिया और उसके पीछे एक फिलासफी को स्वरूप दिया। मैं उनकी क्षति में श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

इसी प्रकार से श्री सी. अच्युत मेनन, केरला के मुख्य मन्त्री थे, कम्युनिस्ट पार्टी के नेता थे, मगर एक विचारक थे, दार्शनिक थे और उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी को बहुत ही अच्छे ढंग से, अपने आप के रूप में पेश किया। मैं उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री लक्ष्मीनारायण किसान हमारे में से एक साथी थे। वह वर्षों तक कांग्रेस के कार्यकर्ता रहे, साथी रहे, सदस्य रहे, कई पदों के ऊपर रहे। उनके जैसे ग्रामीण कार्यकर्ता बहुत कम है। ग्रास रूट वर्कर जिसको हम कहते हैं, ग्रास रूट वर्कर थे। वह कभी भी यह नहीं देखते थे कि जिस दल का कार्यकर्ता है, किस दल का आदमी है। किसी भी पीड़ित को लेकर आने का और उनकी पीड़ा को दूर कराने का उत्तरदायित्व उनके ऊपर, उनके जिम्मे रखा हो, उनकी ड्यूटी हो, ऐसा वह सोचते थे। ऐसे आदमी का चला जाना हमारे बीच में से बहुत बड़े खेद का विषय है। मैं उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री रामचन्द्र जी का अभी हाल ही में देहावसान हुआ है। दुर्भाग्यवश उनका देहावसान इस तरह से हुआ वह पीड़ा का विषय है। हार्ट अटेक हुआ वह यहां आ रहे थे, रास्ते में उनकी मृत्यु हो गयी। यह बहुत अच्छे कार्यकर्ता थे, साथी थे उनकी क्षति हमारी व्यक्तिगत क्षति है। मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री दिनेशराय डांगी राजस्थान के कतिपय हरिजन कार्यकर्ताओं में से एक थे, नेता थे। उन्होंने वर्षों तक राजनीति में सक्रिय भाग लिया। दुर्भाग्यवश पिछले कुछ वर्षों से उनका स्वास्थ्य गिरता चला जा रहा था। उन्होंने हरिजनों के अन्दर समाज

Page No.11

(श्री हरिदेव जोशी)

सुधार का कार्य किया और राजनीति में वे जब से एम. एल. ए. होकर आये, मिनिस्टर रहे, मिनिस्टर थे जब भी अपनी योग्यता से कार्य किया। वे अच्छे साथी थे, अच्छे दोस्त थे मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री फूलचन्द जैन, मेरे व्यक्तिगत मित्र थे, मेरे बहुत बड़े नजदीकी आदमियों में से थे। पिछले वर्षों में राजनीति में इतने सक्रिय थे जितने आध्यात्मिक कार्यों और रचनात्मक कार्य में थे। वह बाहोश कार्यकर्ता थे और किसी भी खतरे के अन्दर कूदने में कभी भी फिक्र नहीं करते थे। आपके पड़ोसी क्षेत्र के निवासी थे इसलिए आप जानते हैं कि किस प्रकार के व्यक्ति हमारे बीच से उठ गये। उनकी ऐसी उम्र भी नहीं थी कि उनका देहावसान होता। चिकित्सा भी अच्छी की थी। खूब अच्छे ढंग से सब लोगों के साथ पेश आते थे। उनकी क्षति हमारी व्यक्तिगत क्षति है। मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री किशनलाल शाह के बारे में सदन के नेता ने जो कहा वह सही है। वह एक जमीन के कार्यकर्ता थे। पहले चुनावों में जब कांग्रेस के कई लोग हारे थे, राजस्थान के अन्दर और खास कर जोधपुर डिवीजन में किशनलाल शाह उन 3-4 आदमियों में से थे जो जीत कर आये थे। इसलिए जमीन में भी उनकी पकड़ थी, वह कार्यकर्ता थे सही मायने में लोगों के नेता थे और उनको साथ में लेकर चलते थे, उनकी क्षति अपूरणीय है। वे पिछले काफी अर्से से बीमार थे, परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें यही मेरी प्रार्थना है।

अध्यक्ष महोदय, महाराव भीमसिंह के बारे में जो कुछ भी कहा जाय वह कम है। हम तो रियासती इलाके में जन्मे हैं, देखा है, बड़े हुए हैं, देखा है और उनसे वास्ता भी पड़ा है, उनको भुगता भी है।

मगर महाराजा भीमसिंह जैसा उदार हृदय व्यक्ति मैंने नहीं देखा। अगर उनसे मिलना नहीं होता था, राजा था इतना ठीक हो सकता है यह कल्पना भी नहीं कर सकते। कोटा पहला राज्य था जिसने विलय के लिए स्वीकृति दी और भारत की अक्षुण्णता को बनाये रखने के लिए कार्य किया। कोटा के बारे में कहा जाता है, रियासतों के बारे में कहा जाता है, हर रियासत के राजा ने अपने लिए कुछ न कुछ किया, कोटा के राजा ने कोई पूंजी छिपाने की अथवा रियासत को नहीं देने की नहीं की वे व्यक्तिगत रूप से बहुत भले आदमी थे और अपना नाता निभाते थे। जब कोटा से जयपुर आते तो मिलने के लिए टेलीफोन करके बात करने की कोशिश करते थे। मेरा और उनका व्यक्तिगत बहुत अच्छा सम्बन्ध था मगर भगवान की इच्छा अजीब है वे लम्बी बीमारी के बाद में इस संसार से चले गये। मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्रीमती आनन्दी देवी जेलिया कोटा जिले से आई थीं, वे एक बार विधान सभा की सदस्य रहीं, बहुत अच्छी कार्यकर्ता थीं, भंवरलाल जेलिया उनके पति भी

(श्री हरिदेव जोशी)

एम. एल. ए. रहे, दुर्भाग्यवश वे बीमार होकर हमारे बीच से उठ गयी हैं।

मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित अर्पित करता हूं।

श्री नत्थीसिंह (नेता जनता दल) : अध्यक्ष महोदय, मैं श्री राजीव गांधी, महाराव भीमसिंह, श्री श्रीपाद अमृत डांगे, अच्युत मेनन, श्री लक्ष्मीनारायण किसान, श्री रामधन, श्री दिनेश राय डांगी, श्री फूलचन्द जैन, श्री किशनलाल शाह, श्री फूलचन्द बाफना, श्रीमती आनन्दी देवी जेलिया को अपनी ओर से और अपने दल की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष श्री राजीव गांधी राजनीति में वह शख्सियत थे जो राजनीति में आना नहीं चाहते थे फिर भी परिस्थितियों वश राजनीति में उन्हें आना पड़ा और भारत के उच्चतम आसन पर वे आसीन हुए। इन परिस्थितियों में, वे परिस्थितियां हमें तीन मौके याद दिलाती है हिन्दुस्तान के लोगों को। आजाद हुआ, बंटवारा हुआ तब इस हिन्दुस्तान की आजादी में एक तरह से जन्म दाता को अपने प्राणों की आहूति देनी पड़ी। 1948 में जो हमारे अन्दर एक तरह से भयानक साम्प्रदायिक आग जली प्रथम आहूति महात्मा गांधी के रूप में दी गयी। इस देश को एक हम रखें, इस देश को कैसे चलायें, यह देश खण्ड-खण्ड नहीं हो इसको कैसे रखें, उसी की शिकार हमारी पूर्व प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी हुई और उनकी हत्या के साथ-साथ उनके पुत्र श्री राजीव गांधी के कन्धों पर इस देश का दायित्व पड़ा। सबसे कम उम्र, जैसा कहा गया प्रधान मंत्री हमारे देश के थे और सबसे कम उम्र के नेता ही हिंसा के द्वारा हमसे छिन गये इसमें कोई दो राय नहीं है कि राजीव गांधी हिन्दुस्तान के प्रधानमंत्री बने तो जहां उनका सपना हिन्दुस्तान को 21वीं सदी में ले जाने का था। हम दकियानूसी वातावरण में रहते है इसमें परिवर्तन करने का मानस था, वहां अपने नजदीक प्रायः हम देखते हैं जो लोग जहां कहीं होते हैं कहते हैं चिराग तले अंधेरा दिखाई नहीं देता लेकिन दो बात जो उन्होंने कही उससे पता चलता है कि उनको परिस्थितियों की पकड़ थी उन्होंने एक तो हिन्दुस्तान में जो विकास का काम होता है उन विकास के कामों में साफ तौर से कहा कि 100 रुपये हम भेजते हैं 85 बीच के दलाल खा जाते हैं और 15 जनता तक पहुंचता है। वहीं उन्होंने अपनी पार्टी के विषय में कहा हमें संगठन को कारगर बनाना है तो सत्ता के दलालों से मुक्ति दिलानी पड़ेगी। इस तरह का मानस उनका इस देश को आगे ले जाने का था और परिस्थितियां बदलीं, सत्ता से बाहर हुए और जब देश खुद एक ऐसे संकट में हैं हम दूसरे देशों में यद्यपि देख रहे हैं, उस समय चुनाव के मैदान में जा रहे थे। जनतन्त्र में हम कहते हैं कि हरेक को अपनी बात कहने का अधिकार है, अपने मतभेद रखने का अधिकार है लेकिन जनता वोट के द्वारा मत के द्वारा चुनाव करे। लेकिन इस देश में यह प्रवृत्ति बढ़ रही है। रोजाना हम देखते हैं कि लोग राजनीति को सोच समझ और बहस का मुद्दा नहीं बनाकर

(श्री नत्थी सिंह)

कतिपय लोग ऐसे इस देश में पैदा हो गये हैं जो गोली के बल पर हिंसा के बल पर अपने राजनीति उद्देश्यों की प्राप्ति करना चाहते हैं। और ऐसी जो अलगाववादी व साम्प्रदायिक प्रवृत्तियां हैं उन्हीं का शिकार राजीव गांधी जी को होना पड़ा। सारे विश्व ने उनको श्रद्धांजलि दी, देश ने दी और वे निश्चित रूप से आदर व मान के साथ याद किए जायेंगे। इस थोड़ी सी उम्र में उन्होंने हिम्मत के साथ, आत्मविश्वास के साथ देश को एक नई दिशा देने की कोशिश की। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

जहां तक श्री डांगे साहब का सवाल है वो इस दुनिया में ऐसा बदलाव लाने के हिमायती ही नहीं बल्कि प्रेरक थे, नेता थे जो विषमता को मिटाकर देश में सामाजिक बराबरी कायम कर सके, दुनिया में सामाजिक बराबरी कायम कर सके। वे साम्यवादी पार्टी और साम्यवादी आंदोलन के वर्षों तक प्रेरक, मार्गदर्शक और नेतृत्व प्रदान करने वाले रहे। मुझे याद है जब बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ था तो हम लोग दिल्ली में थे और डांगे साहब ने उस दिन कुछ लोगों के बीच में कहा कि अब हिन्दुस्तान में समाजवाद आ गया है। वहां जार्ज फर्नाण्डीज भी थे, उन्होंने कहा कि शायद डांगे साहब आप भूल पर हैं यह तो फ्रांस में बहुत पहले हुआ था। आज वो हमारे बीच से चले गए, उस वक्त गए जब सारी दुनिया में साम्यवाद स्वयं संकट की घड़ी से निकल रहा है ऐसे वक्त में उनकी महत्ती आवश्यकता थी और उनकी जो रिक्तता है उसको पूरा करना कठिन है। मैं उनको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

जहां तक श्री लक्ष्मीनारायण किसान का सवाल हैं वो लोकदल के विधायक बनकर आये। राजनीति में जैसा किसान उनका नाम था वे किसानों की समस्याओं के प्रति पूर्णतः समर्पित थे और पूरी तरह से प्रखरता से, सक्रियता से किसान की दशा का परिवर्तन कैसे हो उसमें वे लगे रहते थे। मैं उन्हें अपनी ओर से, अपने दल की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री सी. अच्युत मेनन साहब सिद्धान्त-प्रिय और आस्था के पक्के साम्यवादी नेता और प्रेरक थे। मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने काम किया, उन्हें मैं हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

जहां तक फूलचन्द जी जैन है, हम लोगों ने उनके साथ एक साथी के रूप में काम किया है। राजनीति में बहुत ही मुस्कराता हुआ चेहरा और हमेशा एक-दूसरे का साथ देने वाला और कभी भी खतरों से न डरने वाले व्यक्ति के रूप में वो जाने जाते हैं, उनके लिए मैं हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

मुझे किशनलाल जी शाह के साथ रहने का मौका मिला। जैसा विपक्ष के नेता माननीय जोशी जी ने कहा जब पहली दफा आजादी के बाद जनतंत्र के रूप में हमें विधानसभा और लोकसभा में जाने के

(श्री नत्थीसिंह)

मौके मिले तब राजस्थान ऐसा प्रदेश था जहां सामन्ती परिस्थितियों से हम लोगों ने लोहा लिया। उन सामन्ती परिस्थितियों में भी जोधपुर डिवीजन और राजस्थान के अन्य हिस्सों में सन् 52 का चुनाव काफी सामन्तवाद से प्रभावित रहा था, फिर भी वे उन तीन व्यक्तियों में थे जो उस इलाके से चुनकर आये और जीवन पर्यन्त एक जुझारू, संघर्षशील और पुराने स्वतंत्रता सेनानी थे उसी रूप में कार्यरत रहे।

माननीय श्री रामधन जी, दिनेश राय जी डांगी जो हमारे सदन के सदस्य रहे, डांगी जी मंत्री भी रहे, उनके लिए मैं हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री फूलचन्द जी जो सर्वोदय गांधीवादी थे और माननीय हीरालाल जी शास्त्री के मंत्रिमण्डल के सदस्य रहे, उन्हें और श्रीमती आनन्दी देवी को अपनी ओर अपने दल की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

महाराव भीमसिंह राजस्थान के पूर्व उप राजप्रमुख रहे। उन्होंने बहुत सादा जीवन व्यतीत किया। राजघरानों में मुश्किल से ही मिलते हैं और जिनको राजघरानों से वास्ता पड़ा है उनको अच्छी तरह से पता है ऐसे एक महाराव हमारे बीच से चले गए उन्हें भी मैं हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री हेतराम बेनीवाल (संगरिया): अध्यक्ष जी, इस वर्ष में देश में जो बहुत बड़ी क्षति व्यक्ति के रूप में हुई है वो सिर्फ इस वर्ष की नहीं, मैं समझता हूं बहुत वर्षों पहले से और आगे तक भी इस तरह की घटना बहुत कम देशों में हुई है कि चुनाव के दौरान जब हम एक नई व्यवस्था के लिए सारे देश में लोग इस तरह की कोशिश कर रहे हो कि किसी को वोट के द्वारा, मत के द्वारा परिवर्तित कर सकें, उस समय हमसे राजीव गांधी हत्या के द्वारा छीन लिए गए। ऐसा बहादुर नेता जिन्होंने उन परिस्थितियों में जो 1984 में परिस्थितियां इस देश में पैदा हुई हमारी उस वक्त की तत्कालीन प्रधानमंत्री की हत्या के बाद जैसी परिस्थितियां इस देश में बनी जैसा वातावरण उस छोटे से गुट ने मामूली से एक प्रान्त में छोटा सा एक गुट पैदा हुआ और उस गुट ने इस देश के पूरे 80 करोड़ लोगों को हिलाकर रख दिया। उस परिस्थिति से जिससे प्रान्तों के अंदर रीजनलिज्म प्रान्त, में अलग-अलग भावनाएं पैदा हुई, हर प्रदेश में साम्प्रदायिकता ने सिर उठाना शुरू कर दिया। ऐसा लगता था 1989 में कि शायद हिन्दुस्तान एक नहीं रह पाएगा। ऐसी हालत में श्री राजीव गांधी ने प्रधानमंत्री का पद संभाला और जब उन्होंने प्रधानमंत्री का पद संभाला और उन्होंने शुरू के 6 महीनों तक अपनी छाप हिन्दुस्तान के लोगों पर छोड़ी मैं समझता हूं कि ऐसे रास्ते पर वो चले थे कि लगता था वो बहुत कुछ कर पायेंगे। उन्होंने जिह तरह से अपनी पार्टी का शुद्धि करण करने के लिए बम्बई में जिस तरह का नारा दिया उससे सारी पार्टी में खलबली मचगई, सारी पार्टी हिल गई। जिस तरह से उन्होंने लोंगोवाल समझौता और असम समझौता किया, जिस बहादुरी और हिम्मत से और जितने जल्दी समय में उससे लगता था कि उनकी पकड़ बहुत

(श्री हेतराम बेनीवाल)

मजबूत है। उतनी छोटी उम्र में भी उनका अनुभव, राजनैतिक अनुभव, उनका प्रशासनिक अनुभव कम होते हुए भी उन्होंने जिस तरह से दोनों समझौते किए उससे बहुत बड़ी आशाएं थीं वो आशाएं पूरी नहीं हो पाई।

मैं समझता हूं उनमें व्यक्तिगत उनकी नहीं हमारे देश की परिस्थितियां ऐसी रहीं कि हमारे देश की हालत और गंभीर होती गई। धीरे-धीरे हम इस दशा में पहुंच गए कि हमारे देश में 4–5 साल तक या 3 साल तक राज करने की स्थितियां नहीं रहीं। ऐसी परिस्थितियों में जो चुनाव हुए, उन चुनावों के अंदर यह जो हत्या हुई निश्चित तौर से देश के अंदर एक बहुत छोटे से गुट ने जिसका प्रभाव देश में कहीं नहीं था, किसी वर्ग पर नहीं था, किसी क्षेत्र में नहीं था उसके बावजूद भी वो ऐसी घटना कर पाए और उन्होंने राजीव गांधी की इस तरह से हत्या कर दी, मैं समझता हूं वो हमारे देश का बहुत बड़ा नुकसान है जिसे हम कभी पूरा नहीं कर पाएंगे। मैं व्यक्तिगत तौर से और पार्टी की तरफ से ऐसा महसूस करता हूं कि इस तरह की जो परिस्थितियां हमारे देश में बनीं, इस तरह से राजनीतिक हत्याएं होने लगीं, यदि हम वास्तव में सच्ची श्रद्धांजलि देना चाहते हैं तो सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि इन परिस्थितियों के खिलाफ, ऐसी ताकतों के खिलाफ और ऐसी साजिश के खिलाफ हम सब अपने मतभेद छोड़कर, अपने राजनीतिक और जिन बातों से राजनीति में सत्ता में आना चाहते हैं उनको छोड़कर ऐसी परिस्थिति हिन्दुस्तान में पैदा करें कि ऐसी घटना पुनः न हो सके। कांग्रेस पार्टी का ही नहीं यह नुकसान सारे देश का है, उस परिवार का ही नहीं यह सारे एशिया में जिस तरह की शक्ति उनके द्वारा सम्मेलनों में जो अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुए, निर्गुट देश सदस्य थे उनकी अगुवाई करके उन्होंने ख्याति प्राप्त की थी यह हम सबका नुकसान है। मैं उनको अपनी ओर से श्रद्धांजलि देता हूं।

दूसरे हमारे सी. पी. आई. के नेता वो सी. पी. आई. के ही नहीं वास्तव में देखा जाय तो श्रीपाद अमृत डांगे मजदूरों के नेता थे। उनको राजनीति में कम मजदूरों के आंदोलनों में ज्यादा विश्वास था। हिन्दुस्तान में मजदूर आंदोलनों की शुरूआत जिस कठिन परिस्थिति में की अंग्रेजों के समय में जब एक तरफ ऐसे संगठन बनाये जा रहे थे, जिनमें सहयोग की बात, जिनमें मिलों से बड़े-बड़े सेठों से मिलकर कुछ रियायतें देने की बात थी।

डांगे उन मजदूरों के नेता थे जो यह सोचते थे कि लड़ कर ही लिया जा सकता है और उन्होंने सारे जीवन भर उस बात को, उस संघर्ष को कायम रखा। उनकी वजह से यद्यपि वह संगठन, जिसके वह निर्माता थे, ए. आई. यू. टी. सी., वह बाद में दो-तीन टुकड़ों में विभक्त हो गया पर शुरूआत में बड़े जबरदस्त आंदोलन के वह नेता रहे। श्री डांगे से बहुत दफा व्यक्तिगत तौर पर मुझे मिलने का मौका मिला, उनको सुनने का भी मौका मिला। हिन्दुस्तान में हिन्दी में बोलने वाले दो-चार ही नेता होंगे जो उन जैसा अच्छा भाषण दे सकें। आज मैं समझता हूं कि बहुत बड़ी कमी, मुझे जहां तक याद है,

(श्री हेतराम बेनीवाल)

अटलजी के सिवाय बाकी अगर कोई हिन्दी में बोलता था तो वह वे ही थे जो लाखों लोगों को बिना अपनी राय का होते हुए भी रोक लिया करते थे और उनको सुनाते थे। इस तरह के वक्ता और मजदूरों के प्रवक्ता आज नहीं रहे, उनके लिए मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

इसी तरह से श्री सी. अच्युत मेनन केरल के मुख्यमंत्री रहें। केरल की राजनीति हिन्दुस्तान के उन प्रांतों की राजनीति में से एक राजनीति है जहां पर सरकारें बहुत बदलीं, जिसमें गठजोड़ बहुत बदले हैं, जिसमें भिन्न-भिन्न तरह के गठजोड़ करके ही लोगों ने 1957 के बाद वहां हुकूमतें चलाईं। 1952 के बाद ही शुरूआत हो गई थी और आज तक सारी हुकूमतें वहां गठजोड़ की हुकूमतें रही हैं। ऐसी हुकूमतों में उन्होंने पूरे छह साल तक, साढ़े छह साल तक केरल में हुकूमत की। उसमें कुछ इस तरह का स्थायित्व पैदा किया कि छह साल तक लगातार एक गठजोड़ की सरकार वहां चली। उन्होंने कुछ सुधार, खेती में सुधार, किसानों के और छोटे मजदूरों के सुधार किये जिसकी वजह से वह हमेशा केरल में याद किये जाते रहेंगे।

इसी तरह से हमारी विधान सभा के सदस्य, जिनमें मंत्री भी शामिल है, लक्ष्मीनारायणजी किसान, रामधनजी, दिनेश रायजी डांगी जो मन्त्रिमण्डल के सदस्य भी रहे, फूलचन्दजी जैन, किशनलाल जी शाह, फूलचन्द जी बाफना और श्रीमती आनन्दी देवी जी, जिन्होंने राजस्थान के किसानों की, राजस्थान की जनता की आवाज इस विधान सभा में उठाई और उसके द्वारा कोशिश की कि राज्य का विकास हो सके, मैं उन सभी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

इसके साथ-साथ महाराव भीमसिंह जी का नाम जिन विपक्ष के नेताओं ने, सदन के नेता ने याद किया है, मैं समझता हूं कि हिन्दुस्तान में सबसे बड़ी जो कठिनाई पैदा हुई थी इस देश को एक करने में, वह कठिनाई यह थी कि हम सारे छोटी-छोटी रियासतों में बैठे हुए हैं, जो हमारे यहां रियासतें हैं, सामंत हैं जिनके अपने हित है, उन लोगों को कैसे हिन्दुस्तान में मिलाया जाये, यह एक बहुत बड़ी समस्या थी। इस समस्या में यद्यपि सरदार पटेल अग्रणी थे, उनको हम सभी याद करते हैं पर उनको सहयोग देने वालों में अगर कोई राजस्थान में नाम लिया जा सकता है तो महाराव भीमसिंह जी का नाम लिया जा सकता है जिन्होंने उसमें बहुत सहयोग किया जिस वजह से यह सारी रियासतें एक हो पायीं। उनके चरित्र में सबसे उच्च बात यही है कि जिन राजा-महाराजाओं के नीचे हम पिछले सैकड़ों सालों तक रहे, उनकी प्रापर्टी, उनकी जायदाद, जो उन्होंने कानून से छुपा कर, जिस तरह से बचा कर रखी, वह हर परिवार में झगड़े की जड़ बन गई और हर परिवार के जो बड़े-बड़े राजा-महाराजा थे उनके परिवार आपस में मुकदमों में लड़ रहे हैं, झगड़ रहे हैं। यही ऐसा परिवार है जिसमें इस तरह की स्थिति पैदा नहीं हुई और उसकी वजह यही है कि वह इस मामले में कानून के ही पालक

(श्री हेतराम बेनीवाल)

नहीं, उनकी इच्छा भी ग्राम जनता के साथ ग्राम जनता जैसा बन कर रहने की थी। मैं उनको भी अपनी ओर से, अपनी पार्टी की ओर से श्रद्धांजलि देता हूं।

श्री रामकरण सिंह (कोटपूतली) : अध्यक्ष जी, मैं राजीव जी, महाराव भीम सिंह जी, अमृतजी डांगे, मेनन साहब, लक्ष्मीनारायण जी किसान, रामधन जी, दिनेश रायजी डांगी, फूलचन्द जी जैन, किशनलाल जी शाह, फूलचन्दजी बाफना और श्रीमती आनन्दी देवीजी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। साथ ही सदन के माननीय नेताओं ने जो अपने विचार श्रद्धांजलि के लिए रखे, उनमें अपने आप को सम्मिलित करते हुए मैं हार्दिक श्रद्धांजलि देता हूं।

माननीय राजीव गांधी देश के एक महान नेता ही नहीं थे बल्कि विश्व भर में एक ख्याति प्राप्त, अडिग, निर्भिक, करनी और कथनी में कोई फर्क नहीं समझने वाले ऐसे व्यक्तित्व, जो कि उम्र में बहुत छोटे थे, उनका हमारे बीच में से उठ जाना बहुत ही दुखदायी है और देश को ही नहीं विश्व को बहुत बड़ी क्षति पहुँची है जिसकी पूर्ति होना सम्भव नहीं है। जब से वह राजनीति में ही नहीं, जब से चाहे वह हवाई जहाज के पायलट बने हों और प्रधान मन्त्री बने हों और बनने से लेकर मृत्यु तक उनका पूरा जीवन प्रेरणा स्रोत रहा। वह एक ऐसे ढंग से इस देश के लिए लक्ष्य और संकल्प लिए हुए थे कि इस देश को बहुत बडा और महान बनाना चाहते थे। उन्होंने अपनी कथनी और करनी में कभी भी कोई फर्क नहीं समझा, कभी यह नहीं सोचा।

राजनीतिक ढंग का उनका कभी भी भाषण नहीं हुआ। एक दफा जब बीकानेर साइड में आये तो उन्होंने साफ कहा कि सौ रुपये में से पिच्चासी रुपये लोग भ्रष्टाचार में खो देते हैं। देखिए, उनकी महानता। पार्टी की या अन्य किसी प्रकार की कोई बात उनके दिल और दिमाग में नहीं थी। वह मानवता के प्रतीक थे और उनकी मृत्यु मानवता की मृत्यु मानी जावेगी। यह क्षण, जो विश्व के महान युवा नेता का हमारे बीच में से उठ जाने का आया, वह एक ऐसे ढंग से आया, आत्मघाती के रूप में जिस तरह से दक्षिण में उनकी यह दुर्घटना हुई उससे देश का ही नहीं विश्व का हर प्राणी उनके लिए बहुत दुखी है। यही नहीं, इस बारे में उनकी मृत्यु के बाद में सब महसूस करेंगे कि जितने विश्व के राष्ट्र थे उनको कितना दुःख हुआ। उनकी मृत्यु के उपरांत हर राष्ट्र के जितने भी लोग थे, महान नेता थे, महान शास्त्री थे, महान अर्थशास्त्री थे, राजनीतिज्ञ थे, उनको बहुत ही ज्यादा ठेस पहुँची है। इस लिए ऐसे महान नेता के हमारे बीच में से उठ जाने से बहुत ही दुख होता है।

अन्य जो भी सज्जन हमारे महान नेता हुए हैं, महान व्यक्तित्व थे, हमारे यहां विधान सभा में भी जिन लोगों ने गांव से लेकर शहर तक के हर वर्ग के लिए काम किया है उन सब को मैं अपनी तरफ से और अपने सहयोगियों की तरफ से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री दिग्विजय सिंह (उनियारा) : अध्यक्ष महोदय, मैं श्री राजीव गांधी, पूर्व

(श्री दिग्विजय सिंह)

प्रधान मन्त्री, महाराव भीमसिंह जी, पूर्व उपराजप्रमुख, राजस्थान, श्रीपाद अमृत डांगे, साम्यवादी एवं श्रमिक नेता, श्री अच्युत मेनन, पूर्व मुख्य मन्त्री, केरल, श्री लक्ष्मीनारायण जी किसान, सदस्य, आठवीं राजस्थान विधान सभा, श्री दिनेश रायजी डांगी, सदस्य, तृतीय, पंचम एवं सप्तम राजस्थान विधान सभा और पूर्व मन्त्री फूलचन्द जी जैन, सदस्य, तृतीय एवं पंचम राजस्थान विधान सभा, श्री किशनलालजी शाह, सदस्य, प्रथम, द्वितीय एवं चतुर्थ राजस्थान विधान सभा, श्री फूलचन्द जी बाफना, सदस्य, प्रथम एवं चतुर्थ राजस्थान विधान सभा, श्रीमती आनन्दी देवी जेलिया, सदस्या, द्वितीय राजस्थान विधान सभा, इन सब दिवंगत आत्माओं के प्रति अपने दल की ओर से एवं अपनी ओर से माननीय सदन के नेता व अन्य नेताओं ने जो शोकाभिव्यक्ति की है उसमें अपने विचार और अपनी भावनाएं सम्मिलित करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, इसमें कोई शक नहीं कि स्वर्गीय राजीव गांधी जी उन एक महान विभूतियों में से हैं जिन्होंने न केवल कांग्रेस पार्टी के अन्दर और कांग्रेस पार्टी को एक नयी दिशा और एक नवनिर्माण करने की कोशिश की थी बल्कि हमारे देश को भी उन्होंने एक नया मार्ग और नया मार्गदर्शन देने की कोशिश की। स्व. राजीव जी गांधी आज न केवल हिन्दुस्तान में बल्कि विदेशों में भी याद रखे जायेंगे। यह उन युवा प्रधान मन्त्रियों में से हैं, अगर मैं यह कहूं कि न केवल हिन्दुस्तान के बल्कि विश्व के युवा प्रधान मन्त्रियों की गिनती करें तो स्व. राजीव जी गांधी की है। उन्होंने अपनी इस छोटी उम्र में और छोटे राजनैतिक जीवन में देश को विदेशों के अन्दर प्रथम पंक्ति में लाकर खड़ा करने की कोशिश की। निर्गुट सम्मेलन में भी भारत की भूमिका इतनी आगे दिखाई कि विदेशों में हमारे भारत का नाम राजीव जी गांधी ने और उनके माध्यम से उनके प्रधान मंत्रीकाल में कुछ आगे बढ़ा। वैसे स्व. राजीव जी गांधी की जिस प्रकार से हत्या हुई या हत्या की गयी वह हमारे देश के लिए और इस प्रजातन्त्र के लिए एक कलंक का विषय है और ऐसे समय में जब कि देश में आम चुनाव हो रहे थे उस समय यह जघन्य काण्ड हुआ। मैं समझता हूं कि फिर भी हमारा देश इन सब गम्भीर घटनाओं से और इन सब घटनाओं को झेलता हुआ आगे निकला।

अध्यक्ष महोदय, स्व. राजीव जी गांधी को हम सच्ची श्रद्धांजलि और उनकी सच्ची श्रद्धांजलि के रूप में तभी समझ पायेंगे जब कि हम उनके द्वारा बताये गये कुछ विकास के मार्ग जो अभी भी आगे होने हैं उनको हम प्रशस्त करें और आगे बढ़ायें। मैं अधिक नहीं कहता हुआ राजीव जी गांधी के प्रति अपनी ओर से व अपने दल की ओर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके शोक संतप्त परिवार को इस दुर्घटना से जो आघात पहुँचा है और जिस शौर्यता से और धैर्यता का परिवार ने परिचय दिया है प्रभु उनको और साहस प्रदान करे—इसकी मैं कामना करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, पूर्व महाराव भीमसिंह जी जो कि उप-राजप्रमुख राजस्थान के रहे–उनका और मेरा काफी

(श्री दिग्विजय सिंह)

निजी परिचय भी रहा। जैसा सदन के नेता ने और प्रतिपक्ष के नेता ने महाराव भीमसिंह जी के लिए जो बात कही वह बिलकुल सही है। उस पद पर या महाराव होने के नाते भी उन्होंने अपने शासनकाल में भी कोई इस बात की अपनी तरफ से कोई प्रजा के प्रति कभी भी कोई कदम इस प्रकार के नहीं उठाये जिससे कि वहां की प्रजा ने उनके खिलाफ कोई इस प्रकार का बहुत बड़ा आन्दोलन किया हो। वह राजा होते हुए भी इतने साधारण स्वभाव के थे कि मैं समझता हूं कि यदि आप में से कोई भी उनसे मिले होंगे, अगर कोई अपरिचित था और पहले मिलने चला जाता और अगर वह अलग कमरे में बैठे हुए मिलते तो कोई कह नहीं सकता था कि महाराजा साहब हैं। एक बहुत ही शांत और सीधे प्रवृत्ति के आदमी थे। मेयो कालेज के अन्दर शिक्षा-दीक्षा प्राप्त की और मैयो कालेज जनरल कौंसिल के वह बीस-बाइस वर्ष तक अध्यक्ष रहे। आल इण्डिया शूटिंग कम्पीटीशन के अन्दर भी वह प्रथम रहे और भारत का प्रतिनिधित्व उन्होंने यूनाइटेड नेशन्स में भी किया। उनका जो स्वभाव था और उनकी जो सरलता थी वह मैं समझता हूं कि बहुत ही कम व्यक्तियों में ऐसी मिल पायेगी। उनका आज हमारे बीच में से उठ जाने से व्यक्तिशः क्योंकि उनका मेरा लगाव बिलकुल पारिवारिक का सा था, मुझे व्यक्तिशः क्षति हुई है और मैं समझता हूं कि ऐसी महान् विभूति जो हमारे बीच में से उठ गयी इस देश को भी और हमारे राजस्थान को भी क्षति पहुँची है, इसलिए उस आत्मा के प्रति मैं अपने दल की ओर से और अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री अमृत डांगे साहब जो कि मजदूर जुझारू नेता थे, इनके बारे में मैंने पढ़ा है और सुना भी है कि वह इतने संघर्षरत थे कि उन्होंने मजदूरों के संगठन को आगे बढ़ाने में कई कार्य किये हैं। मैं उनके प्रति अपनी ओर से और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री अच्युत मेनन जो कि पूर्व मुख्य मंत्री केरल के रहे है उनके प्रशासन काल में उनकी दक्षता जो रही है वह सब जानते हैं। मैं उनके प्रति भी अपने दल की ओर से और अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री लक्ष्मीनारायण जी किसान जो कि इस विधान सभा के सदस्य रहे हैं और उनके साथ हम विपक्ष में भी रहे। उनका व्यवहार जिस प्रकार का नाम है किसानों की समस्याओं को लेकर जब कभी कोई विषय विधान सभा में आता तो वह उनको उठाने में, उनको सामने रखने के अन्दर कभी नहीं चूकते थे और किसानों की मांगों के लिए वह हमेशा संघर्षरत रहे। ऐसे व्यक्ति जो आज हमारे बीच में से उठ गये हैं उनके प्रति भी मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री रामधन जी जो राजस्थान की आठवीं विधान सभा के सदस्य रहे वह भी विधान सभा की कार्यवाही में काफी भाग लिया करते थे। उनके प्रति भी, मैं वह

(श्री दिग्विजय सिंह)

आज हमारे बीच में नहीं रहे अपनी ओर से ओर अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री दिनेशराय जी डांगी जो कि न केवल विधान सभा के सदस्य रहे बल्कि कांग्रेस सरकार में मंत्री पद पर भी रहे। मेरा व्यक्तिशः उनसे परिचय भी रहा है और वह बहुत सरल स्वभाव के मिलनसार और काम करने वाले व्यक्ति थे। उनका आज हमारे बीच में नहीं रहना इस माने में क्षति हुई है इसलिए मैं अपने दल की ओर से और व्यक्तिशः अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री फूल चन्द जी जैन उनसे भी मैं परिचित था। वह कांग्रेस के सदस्य थे। मैं विपक्ष में बैठता था। हम विधान सभा के अन्दर साथ-साथ और काफी सरल स्वभाव के व्यक्ति थे, मिलनसार थे और इस प्रकार से उनका विधान सभा के कार्यक्रमों में और विधान सभा की अन्य कमेटियों में वह चेयरमैन भी रहे, सदस्य भी रहे और मुझ को उनके साथ काम करने का मौका भी मिला। उनका जो स्वभाव था वह बहुत ही सीधा था और विधान सभा की कार्यवाहियों के अन्दर बहुत रूचि लेते थे, उनका हमारे बीच से उठ जाना हमारे सब के लिए, राजस्थान के लिए भी एक हानिकारक रहा है। इसलिए मैं अपने दल की ओर से और अपनी ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री किशन लाल शाह, जिनके बारे में सदन के नेता ने एक बात पहले ही कही, कि जुझारु रहे। 1962 में जब स्वतन्त्र पार्टी नई गठित हुई थी, उस समय मेरे साथ सदस्य रहे थे और 1962 में रहे, 1967 में रहे। उनका जो स्वभाव था, वह बिल्कुल सहज था। जैसा सदन के नेता ने कहा, स्पष्ट वक्ता थे, साफ कहने वाले थे। वे पार्टी के अन्दर अपनी बात को, अपनी भावना को साफ और पुरजोर शब्दों में कहा करते थे और विधान सभा के अन्दर भी अपने क्षेत्र की समस्या और राजस्थान की समस्याओं को उठाने से नहीं चूकते थे।

वे आज हमारे बीच में नहीं रहे। उनके प्रति भी अपने दल की ओर से और अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री फूल चन्द बाफना भी मेरे साथ सन् 1962 में जब स्वतन्त्र पार्टी का गठन हुआ था, विधान सभा के सदस्य चुनकर आये, हमने साथ काम किया। बड़े सरल स्वभाव के व्यक्ति, मिलनसार और गांधीवादी विचारधारा के। ऐसे व्यक्ति आज हमारे बीच में नहीं रहे। उनके प्रति भी अपने दल की ओर से और अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्रीमती आनन्दी देवी जेलिया राजस्थान विधान सभा की सदस्य रही। वे भी आज हमारे बीच नहीं हैं। उनके प्रति भी अपने दल की ओर से और अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सदन के नेता ने जो प्रस्ताव रखा है, उसमें अपने

(श्री दिग्विजय सिंह)

को सम्मिलित करते हुए अपनी संवेदना प्रकट करता हूं ।

श्री अध्यक्ष : श्री अचला राम।

श्री अचला राम (देसूरी) : अध्यक्ष महोदय, पूर्व प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी सहित जिन नेताओं के प्रति आज सदन में शोकाभिव्यक्ति की गई है, उन सभी के लिये में श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

साथ ही साथ मेरे क्षेत्र के श्री दिनेश रायजी डांगी जो लम्बे समय तक मेरे क्षेत्र से लड़ते रहे, उनका जो स्वर्गवास हुआ, वह बड़ा दुखद रहा। श्री डांगी अपने पीछे एक लम्बा चौड़ा परिवार छोड़कर चले गये। वे राजस्थान की तीसरी, पांचवीं और सातवीं विधान सभा के सदस्य रहे। उनका अनुसूचित जाति के ऊपर इतना प्रभाव था कि जिसका मुकाबला हम भी आज दिन तक नहीं कर पाये। उनका स्वर्गवास होने पर मेरे क्षेत्र में बहुत बड़ा घाटा हुआ है।

अध्यक्ष महोदय, ठीक इसी तरह से स्वतन्त्रता सेनानी श्री फूल चन्दजी बाफना जी ग्रामोदय विचारधारा के थे, गांधीवादी विचारधारा के थे, उनका भी स्वर्गवास हुआ। वे हमारे क्षेत्र के निवासी थे। उनका स्वर्गवास हो जाने पर जो हमारे क्षेत्र को घाटा हुआ है, उसकी कभी पूर्ति नहीं हो पायेगी।

अध्यक्ष महोदय, दोनों नेताओं के जाने से हमारे क्षेत्र को घाटा हुआ है। वे ऐसे नेता थे जो स्वतन्त्रता के बाद में लगातार क्षेत्र की सेवा करते रहे और जन सेवा में हमेशा लगे रहे।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं दोनों नेताओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, शोक एवं दुःख के माहौल में डूबे हुए इस सदन के माननीय सदन के नेता, प्रतिपक्ष दल के नेता, अन्य दलों के नेताओं एवं सदस्यों ने श्री राजीव गांधी, पूर्व प्रधान मंत्री, महाराव श्री भीमसिंह पूर्व उपराज प्रमुख, राजस्थान, श्रीयुत् श्रीपाद अमृत डांगे, स्वतन्त्रता सेनानी, श्री सी. अच्युत मेनन, पूर्व मुख्य मंत्री, केरल तथा इस विधान सभा के पूर्व सदस्य श्री लक्ष्मीनारायण किसान, श्री रामधन, श्री दिनेश राय डांगी, श्री फूल चन्द जैन, श्री किशन लाल शाह, श्री फूल चन्द बाफना, एवं श्रीमती आनन्दी देवी जेलिया के प्रति जो शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया है व संवेदना प्रकट की है उसमें मैं अपने आपको भारी दिल से शरीक करता हूं।

21 मई, 1991 की रात को मद्रास के निकट श्री पेरम्बुदूर में एक भीषण बम विस्फोट में श्री राजीव गांधी की जघन्य हत्या से देश के राजनीतिक क्षितिज से एक देदीप्यमान नक्षत्र विलीन हो गया।

पूर्व प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी का जन्म 20 अगस्त, 1944 को बम्बई में हुआ। आप श्रीमती इन्दिरा गांधी और श्री फिरोज गांधी के सबसे बड़े पुत्र थे। आपकी शिक्षा दून स्कूल, देहरादून और

(श्री अध्यक्ष)

ट्रिनिटी कालेज केम्ब्रिज में हुई। आपने मैकेनिकल इंजीनियरिंग का कोर्स किया।

प्रारम्भ में आप अपनी अभिरुचि के अनुकूल इण्डियन एयर लाइन्स में पायलट बने। छोटे भाई श्री संजय गांधी की वायु दुर्घटना में हुई मृत्यु ने आपके जीवन में मोड़ ला दिया और आपने राजनीति में पदार्पण किया। पहली बार 1981 में लोक सभा के उपचुनाव में आप अमेठी संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से चुने गये। 1984 एवं 1989 में भी आप इसी संसदीय क्षेत्र से निर्वाचित हुए थे तथा 1991 का लोक सभा चुनाव भी आप इसी क्षेत्र से लड़ रहे थे।

श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के कुछ ही घंटों के बाद श्री राजीव गांधी 31, अक्टूबर, 1984 को भारत के प्रधान मंत्री बने। लोक सभा चुनाव के बाद 31 दिसम्बर, 1984 को पुनः प्रधान मंत्री बने और 1989 तक इस पद पर बने रहे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) के अध्यक्ष रहे श्री राजीव गांधी इण्डियन नेशनल ट्रस्ट फार आर्ट एण्ड कल्चरल हेरिटेज, जवाहर लाल नेहरू मैमोरियल फण्ड और कमला नेहरू मैमोरियल हास्पीटल के चेयरमैन रहे। इसके अतिरिक्त आप एयरो क्लब आफ इण्डिया के प्रेसीडेण्ट, नेशनल ट्रस्ट फार केम्ब्रिज युनिवर्सिटी और इण्डो-अरब सोसाइटी के सदस्य भी रहे।

फोटोग्राफी और वायुयान उड़ाने के अलावा खेलों में भी आपकी विशेष रुचि थी। आप दिल्ली गोल्फ क्लब और प्रेसीडेंट्स एस्टेट पोलो क्लब के सदस्य थे। 1982 में दिल्ली में हुए नवें एशियाई खेलों के आयोजन में आपने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

श्री गांधी की इच्छा थी कि भारत एक मजबूत, धर्म-निरपेक्ष, प्रजातांत्रिक और संगठित राष्ट्र के रूप में 21 वीं सदी में प्रवेश करे और विकासशील की जगह विकसित देश कहलाये। अपने प्रधानमंत्री काल में आपने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये। राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए आपने 24 जुलाई, 1985 को संत लोंगोवाल से पंजाब समझौता, 15 अगस्त, 1985 को असम के छात्रों से असम समझौता, 30 जून, 1986 को मिजोरम के नेता लालडेंगा से मिजोरम समझौता और चौथा समझौता 25 जुलाई, 1988 को गोरखा आन्दोलन के नेता सुभाष घीसिंग के साथ किया।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के कार्यान्वयन में श्री गांधी ने जहां एक ओर शांति, सद्भावना और निरस्त्रीकरण की आवश्यकता पर बल दिया वहीं दूसरी ओर आपने विभिन्न क्षेत्रों में पारस्परिक सहयोग की बात भी की। पड़ोसी राष्ट्रों से मधुर सम्बन्ध बनाए रखना उनका मुख्य उद्देश्य था। संकट से घिरे श्री लंका के तमिलों को राहत पहुँचाने के लिए आपने 1987 में भारत-श्रीलंका समझौता किया। भारत-चीन सम्बन्धों के क्षेत्र में दिसम्बर, 1988 में श्री गांधी की चीन यात्रा ऐतिहासिक मानी जाती है।

गुट निरपेक्ष आन्दोलन के अध्यक्ष के रूप में आपने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद

(श्री अध्यक्ष)

की समाप्ति के लिए काफी आवाज उठाई। 1986 में हरारे के गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन में अफ्रीका कोष की स्थापना की। आपने नवम्बर, 1988 में मालदीव के राष्ट्रपति श्री अब्दुल गयूम की सहायता के लिए भारतीय सेना भिजवा कर श्री लंका के तमिल उग्रवादियों के षड़यंत्र को विफल किया। नामीबिया की आजादी के लिए भी आपने हर सम्भव प्रयत्न किये। 1990 में नामीबिया को स्वाधीनता मिलने पर वहां के राष्ट्राध्यक्ष सैम नुजोमो ने आपको एक समारोह में विशेष रूप से आमंत्रित किया।

प्रधानमंत्री पद पर नहीं रहने पर भी आपका अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व अक्षुण्ण रहा। खाड़ी युद्ध के समय आपने सोवियत संघ और ईरान की यात्रा कर युद्ध को समाप्त कराने का प्रयास किया।

भारतीय राजनीति में दल बदल को रोकने के लिए बनाया गया दल-बदल विरोधी कानून आपके शासन काल की प्रमुख उपलब्धि माना गया है। आपके कार्यकाल में ग्रामीण एवं शहरी बेरोजगारों के लिए भी अनेक रोजगारोन्मुख कार्यक्रम शुरू किये।

यद्यपि श्री राजीव गांधी आज नहीं है किन्तु उनका अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व सदा ही भारत के मानस पटल पर अंकित रहेगा। आपने अपने सुनहरे स्वप्न की उद्घोषणा 3 जून, 1985 को अमरीकी संसद में यह कहते हुए की थी कि "मैं युवा हूं। और मेरा भी एक दृष्टिकोण है। मानव मात्र की सेवा के लिए विश्व के बड़े राष्ट्रों की अग्रिम पंक्ति में मजबूत, स्वतन्त्र और स्वावलम्बी भारत मेरा स्वप्न है।"

राजस्थान के पूर्व उप राज प्रमुख महाराव श्री भीमसिंह का जन्म 14 सितम्बर, 1909 को हुआ। आप कोटा राज्य के शासक महाराव श्री उम्मेद सिंह द्वितीय के पुत्र थे। आपकी शिक्षा अजमेर के मेयो कॉलेज में हुई जहां आपने पोस्ट डिप्लोमा ऑनर्स के साथ किया।

महाराव श्री उम्मेद सिंह के निधन के पश्चात् 27 दिसम्बर, 1940 को कोटा राज्य के सत्रहवें हाड़ा शासक के रूप में श्री भीमसिंह का राज्यारोहण हुआ। 5 अप्रेल, 1941 को ब्रिटिश ए. जी. जी. सर आर्थर डोथीन ने आपको खरीता प्रदान किया। सन् 1948 में आपको के. सी. एस. आई. और 1960 में राजस्थान विश्वविद्यालय की ओर से आपको "डाक्टर ऑफ लॉ" की उपाधि से विभूषित किया गया।

सन् 1942 में आपको मेजर के रूप में मानद कमीशन प्रदान किया गया। 1944 में लेफ्टिनेन्ट कर्नल और 1948 में आपको ब्रिगेडियर का मानद पद प्रदान किया गया। आपको 1935 में सिल्वर जुबली मैडल, 1937 में कोरोनेशन मैडल 1939 और 1945 में वारमैडल तथा 1947 और 1949 में जम्मू एवं कश्मीर मैडल से अलंकृत किया गया।

सन् 1941 से 1945 तक आप ब्रिटिश राज में वायसराय की युद्ध परिषद

Page No.24

(श्री अध्यक्ष)

के सदस्य रहे। रियासतों के विलीनीकरण के बाद 1948 से 56 तक आप राजस्थान के उप राज प्रमुख रहे। आपको 17 परम्परागत तोपों की सलामी का सम्मान प्राप्त था। 1956 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में गये भारतीय प्रतिनिधि मण्डल में आप भी शामिल थे।

छात्र जीवन से ही खेलों में आपकी विशेष रुचि रही। क्रिकेट और टेनिस में कॉलेज की ओर से आपको "कलर्स" प्रदान कर सम्मानित किया गया। आप शिकार के बेहद शौकीन थे। इसी शोक ने आपको अचूक निशानेबाज बना दिया जिससे अन्तर्राष्ट्रीय खेल जगत में आपका नाम रोशन हुआ।

"कले पीजन शूटिंग" में तो आपको महारथ हासिल थी। इस खेल में आपने राजस्थान और भारत के लिए कई पदक प्राप्त किये। आपने निशानेबाजी चैम्पियनशिप की अन्तर्राष्ट्रीय स्पर्द्धाओं में अनेक बार भारत का प्रतिनिधित्व किया। निशानेबाजी में आपकी सर्वोत्कृष्ट सेवाओं के लिए 1971 में राष्ट्रपति द्वारा आपको अर्जुन अवार्ड से विभूषित किया गया।

गत तीन-चार वर्ष से कैंसर से पीड़ित रहे महाराव श्री भीमसिंह का शनिवार दिनांक 20 जुलाई, 1991 की रात को 1 बजकर 25 मिनट पर निधन हो गया।

प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्रीयुत श्रीपाद अमृत डांगे का जन्म 10 अक्टूबर, 1899 को बम्बई के महाराष्ट्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपने मैट्रिक की परीक्षा नासिक से पास की तथा स्नातक की पढ़ाई बम्बई में की। स्नातक होने में तीन माह बाकी थे तभी 1919 में महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के लिए आपने पढ़ाई छोड़ दी।

स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान आप लगभग 16 वर्ष जेल में रहे। कानपुर षड़यन्त्र केस, मेरठ षडयंत्र केस और युद्ध विरोधी गतिविधियां आपकी जेल यात्रा के प्रमुख कारण रहे। 1956 के बम्बई राज्य भाषाई आन्दोलन के दौरान भी आपको जेल यात्रा करनी पड़ी।

आपने आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के सहायक सचिव के रूप में बम्बई गिरनी कामगार यूनियन की स्थापना की जो आगे चलकर एशिया की सबसे बड़ी मजबूत यूनियन मानी गई। आप 1922 से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक सदस्य थे। 1962 से 1979 तक आप भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी की राष्ट्रीय परिषद के अध्यक्ष रहे। कम्युनिष्ट आन्दोलन में आपके योगदान को मान्यता देते हुए सोवियत संघ की सरकार ने आपको "आर्डर आफ लेनिन" से सम्मानित किया।

श्री डांगे 1928, 1929 और 1936 में ऑल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे। 1946 से 1951 तक आप बम्बई विधान सभा के सदस्य रहे। आप 1957 से 1962 तक तथा दूसरी बार 1967 से 1970 तक लोकसभा के सदस्य रहे।

(श्री अध्यक्ष)

आपने 1922 में "सोशलिस्ट" नामक अंग्रेजी साप्ताहिक का प्रकाशन शुरू किया। आपने 1945 में मराठी के श्रमिक वर्ग के पहले पत्र "क्रांति" की शुरूआत की। भारत के अतीत पर आपकी पुस्तक "इण्डिया फ्रांम प्रमिटिव कम्युनिज्म टू स्लेवरी" एक बहुचर्चित कृति रही है। "लिटरेचर एण्ड दी पीपुल," गांधी वर्सेस लेनिन", "हेन फाउण्ड", "महात्मा गांधी एण्ड हिस्ट्री" तथा "ह्वेन कम्युनिस्ट डिफर" आपकी अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशित कृतियां हैं।

लम्बी बीमारी के बाद 22 मई, 1991 को श्री डांगे का बम्बई में निधन हो गया।

केरल के पूर्व मुख्य मन्त्री और भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी के वयोवृद्ध नेता श्री चेलत अच्युत मेनन का जन्म 13 जनवरी, 1913 को त्रिचूर जिले में हुआ। आपने सेण्ट थोमस कॉलेज, त्रिचूर से स्नातक परीक्षा विशेष योग्यता के साथ पास की। तिरुअनन्तपुनम् लॉ कॉलेज से आपने विधि की उपाधि प्राप्त की। इसमें आप मद्रास विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान पर रहे और "हिन्दू विधि" में विशिष्ट योग्यता के लिए आपको भाष्यम् आयंगर गोल्ड मैडल से विभूषित किया गया।

सन् 1936 में आप त्रिचूर में अधिवक्ता बने लेकिन जल्दी ही वकालत के पेशे को तिलांजलि देकर आप कांग्रेस कार्यकर्ता और स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में राजनीति में सक्रिय हुए। आप त्रिचूर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष और प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य बनाये गये। आप कोचीन कांग्रेस के संस्थापक सचिव भी रहे। 1942 में आप भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़े और पार्टी के विभिन्न पदों पर रहे।

राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के कारण आपको अनेक बार जेल यात्रा करनी पड़ी। सन् 1940 में युद्ध विरोधी भाषण देने पर एक वर्ष के लिए तथा 1942 में भी एक वर्ष के लिए आपको जेल में रहना पड़ा।

सन् 1957 में आप केरल विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए। प्रथम केरल सरकार में आप वित्त मंत्री बनाये गये। केरल की राजनीति में आप 7 वर्ष 4 माह के लम्बे समय तक मुख्य मंत्री रहे। पहली बार आप 1 नवम्बर, 1969 से 1 अगस्त 1970 तक और दूसरी बार 4 अक्टूबर, 1970 से मार्च, 1977 तक मुख्य मंत्री रहे। श्री मेनन के कार्यकाल में हुए भूमि-सुधार, निजी वन क्षेत्रों का राष्ट्रीयकरण, कृषक मजदूर अधिनियम और व्यापक औद्योगिकरण कार्यक्रम आदि विशेष उपलब्धि के रूप में माने जाते हैं।

विभिन्न विषयों पर श्री मेनन द्वारा मलयालम और अंग्रेजी भाषा में लिखी गई पुस्तकें उनके विद्वतापूर्ण व्यक्तित्व को परिलक्षित करती है। "केरला एण्ड इट्स प्रोब्लम्स" आपकी अंग्रेजी में लिखी गई पुस्तकों में प्रमुख है।

श्री अच्युत मेनन का निधन दिल का दौरा पड़ने पर 16 अगस्त, 1991 को तिरुअनन्तपुनम् में हुआ।

Page No.26

(श्री अध्यक्ष)

श्री लक्ष्मीनारायण का जन्म जयपुर जिले के मूण्डियागढ़ में 31 अगस्त, 1938 को हुआ । आपने राजकीय मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी द्वारा संचालित हाई स्कूल, किशनगढ़-रेनवाल से मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की ।

श्री किसान आठवीं राजस्थान विधान सभा (1985-90) में सदस्य रहे । आप लोकदल के टिकिट पर फुलेरा विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित हुए थे । आठवीं विधान सभा के कार्यकाल के दौरान आप पुस्तकालय समिति तथा राजकीय उपक्रम समिति के सदस्य रहे । पिछड़े वर्ग के लोगों के उत्थान हेतु आप सदा ही प्रयत्नशील रहे । धार्मिक कार्यों में आपकी विशेष रुचि थी ।

रविवार, दिनांक 4 अगस्त, 1991 को दिल का दौरा पड़ने से श्री लक्ष्मीनारायण किसान का निधन हुआ ।

श्री रामधन का जन्म अलवर जिले की राजगढ़ तहसील के गांव गुरिया में 2 जुलाई, 1937 को हुआ । आपने मिडिल तक शिक्षा प्राप्त की ।

आप शुरू से ही सामाजिक गतिविधियों से जुड़े रहे । 1955-56 में आप ग्राम पंचायत के पंच, 1957-58 में उप सरपंच और 1959-60 में सरपंच रहे । सन् 1960 से 1965 तक आप पंचायत समिति रेनी के प्रधान रहे । साथ ही आप 1966 से 1973 तक क्रय-विक्रय सहकारी समिति, राजगढ़ के चेयरमैन रहे । इसके अलावा आप अनुसूचित जनजाति प्रकोष्ठ जिला अलवर के संयोजक भी रहे ।

आठवीं राजस्थान विधान सभा के लिए आप राजगढ़ सुरक्षित विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस (आई) के उम्मीदवार के रूप में निर्वाचित हुए । विधान सभा के कार्यकाल (1985-90) के दौरान आप विशेषाधिकार समिति तथा अनुसूचित जनजाति कल्याण समिति की सदस्य भी रहे ।

आपका निधन हो गया है ।

राजस्थान सरकार के पूर्व मंत्री श्री दिनेश राय डांगी का जन्म 26 अप्रेल, 1931 को पाली जिले के बाली ग्राम में हुआ । आपने गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद से बी. ए. (स्पेशल) की उपाधि प्राप्त की ।

श्री डांगी तीन दशक तक राज्य की राजनीति में सक्रिय रहे । आप 1965 से 1982 तक अखिल भारतीय कांग्रेस (आई) कमेटी के सदस्य और 1978 से 1980 तक राजस्थान प्रदेश कांग्रेस (आई) कमेटी के संयुक्त मंत्री रहे ।

श्री डांगी सन् 1962, 1972 एवं 1980 में तीनों बार पाली जिले के देसूरी विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में निर्वाचित हुए । तीसरी विधान सभा में आप 1962 से 1967 तक श्री मोहनलाल सुखाड़िया मंत्रिमण्डल में पंचायत राज एवं लघु सिंचाई भाग के उप मंत्री रहे । पांचवी विधान सभा (1972-77) के कार्यकाल

(श्री अध्यक्ष)

के दौरान आप सरकारी आश्वासन संबंधी समिति तथा अनुसूचित जाति कल्याण समिति के सभापति रहे। सातवीं विधान सभा (1980-85) में आप श्री शिवचरण माथुर के मंत्रिमण्डल में जुलाई, 1981 से फरवरी, 1985 तक राज्य मंत्री रहे। आपने राज्य मंत्री के पद पर रहते हुए राजस्थान सरकार के पुनर्वास, खादी एवं ग्रामोद्योग, कारागृह, मुद्रण एवं लेखन सामग्री, आयुर्वेद, राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम तथा सिंचाई विभाग के दायित्व का निर्वहन किया।

सन् 1962 तक आप राजस्थान अनुसूचित जाति सेवा संघ के अध्यक्ष तथा 1968 से 1972 तक राजस्थान प्रदेश कांग्रेस अनुसूचित जाति एवं जनजाति विभाग के संयोजक रहे।

श्री दिनेश राय डांगी का निधन मंगलवार दिनांक 16 जुलाई, 1991 को हुआ।

राजस्थान के पूर्व विधायक, समाजसेवी और स्वतन्त्रता सेनानी श्री फूलचन्द जैन का जन्म 3 नवम्बर, 1930 को चुरू जिले के सुजानगढ़ में हुआ। आपने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की।

1945 में आपने प्रजा परिषद् के कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया और स्वाधीनता संग्राम में भाग लेकर 1945-47 की अवधि में बीकानेर जेल में भी रहे। 1946 से 1949 तक आप सुजानगढ़ नगर तहसील प्रजा परिषद् के मंत्री रहे। 1952 से 54 तक आप भारतीय युवक कांग्रेस के कार्यवाहक अध्यक्ष रहे। 1953 में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस के प्रतिनिधि और राजस्थान प्रदेश युवक कांग्रेस के संयोजक भी रहे। 1963 में आप राजस्थान युवक कांग्रेस के अध्यक्ष बने। 1957 से 62 तक आप राजस्थान प्रदेश के कांग्रेस प्रधान मंत्री रहे। बाद में आप जनता पार्टी तथा लोकदल के प्रदेश महासचिव भी रहे।

श्री फूलचन्द जैन तीसरी और पांचवीं राजस्थान विधान सभा के सदस्य रहे। 1962 और 1972 में आप कांग्रेस के टिकिट पर ही सुजानगढ़ विधान सभा क्षेत्र से निर्वाचित हुए। तीसरी विधान सभा (1962-67) के कार्यकाल के दौरान आप अधीनस्थ विधान सम्बन्धी समिति तथा जन लेखा समिति के सभापति रहे। कल्याणकारी कार्यों में विशेष रूचि होने के कारण आप अनेक सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से जुड़े रहे।

श्री फूलचन्द जैन का निधन 20 अप्रेल, 1991 को हुआ।

स्वतंत्रता सेनानी और पूर्व विधायक श्री किशनलाल शाह का जन्म नागौर जिले की नांवा तहसील के मारोठ गांव में 10 मई, 1918 को हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में आपने एम. ए., एल. एल. बी. और साहित्यरत्न की उपाधि प्राप्त की। वकालत आपका प्रमुख व्यवसाय रहा।

पहली, दूसरी और चौथी राजस्थान विधान सभा में सदस्य रहे। श्री शाह कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में 1952 में नावां विधान सभा क्षेत्र से तथा 1957 में परबतसर विधानसभा क्षेत्र से निर्वाचित हुए। 1967 में आप स्वतंत्र पार्टी के

(श्री अध्यक्ष)

उम्मीदवार के रूप में नागौर के नावां विधान सभा क्षेत्र से ही पुनः निर्वाचित हुए।

1946 में मारवाड़ लोक परिषद् के सातवें अधिवेशन में जागीरदारी समाप्त करने सम्बन्धी प्रस्ताव को पारित कराने में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

लम्बी बीमारी के बाद 25 अगस्त, 1991 को श्री किशनलाल शाह का निधन हो गया।

राजस्थान के पूर्व मंत्री प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी श्री फूलचन्द बाफना पाली जिले के सादड़ी कस्बे के मूल निवासी थे। आपका जन्म सादड़ी के एक ओसवाल परिवार में 14 मार्च, 1914 को हुआ और शिक्षा सादड़ी और जोधपुर में हुई। अपने छात्र जीवन से ही आप सामाजिक सेवा कार्यों में भाग लेने लग गए थे।

जोधपुर में मारवाड़ लोक परिषद् की स्थापना होने पर आप लोक परिषद् के सदस्य बन गये। आपने लोक परिषद् की अनेक शाखाओं की स्थापना की। 1940 में मारवाड़ लोक परिषद् के पहले सत्याग्रह में आपने सक्रिय रूप से भाग लिया था। जिम्मेवार हुकूमत आन्दोलन के दौरान आपको जुलाई, 1942 में गिरफ्तार कर 2 वर्ष तक जेल में रखा गया। 1944 में आप मारवाड़ लोक परिषद् के प्रधान मंत्री निर्वाचित हुए।

श्री हीरालाल शास्त्री के नेतृत्व में राजस्थान के प्रथम मंत्रिमण्डल में श्री बाफना 30 मार्च, 1949 से 5 जनवरी, 1951 तक मंत्री रहे। 1951 के बाद आप भूदान, सर्वोदय, समाज कल्याण, समाज शिक्षा और रचनात्मक कार्यों में सक्रिय रहे।

आप रानी और देसूरी पंचायत समिति के प्रधान, मारवाड़ जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी रहे। 1967 में चौथी राजस्थान विधान सभा के लिए सुमेरपुर निर्वाचन क्षेत्र से स्वतंत्र पार्टी के उम्मीदवार के रूप में निर्वाचित हुए।

आपकी प्रकाशित कृतियों में "फड़कता संग्रह", "घर का ज्योतिष" और "आधुनिक पंचतंत्र" प्रमुख है।

आदर्शवादी वयोवृद्ध राजनेता श्री बाफना का निधन 8 जून, 1991 को हुआ।

श्रीमती आनन्दी देवी जेलिया का जन्म कोटा जिले की इटावा तहसील के बयाना ग्राम में हुआ। दूसरी राजस्थान विधान सभा के लिए 1957 के आम चुनाव में आप कांग्रेस के टिकिट पर कोटा के बारां विधान सभा क्षेत्र से निर्वाचित हुई। आपका विवाह 20 मार्च, 1942 को श्री कंवरलाल जेलिया से हुआ। आपके पति श्री कंवरलाल जेलिया प्रथम राजस्थान विधान सभा में सदस्य रहे।

श्रीमती आनन्दी देवी जेलिया कांग्रेस की सक्रिय सदस्या रही और कांग्रेस के रचनात्मक कार्यों में सहयोग किया। छोटे बालकों के पोषण और विकास में आपकी विशेष रुचि थी। अपने पति के विधान

(श्री अध्यक्ष)

सभा कार्यकाल में आप भी उनके साथ सार्वजनिक सेवा कार्यों में हाथ बंटाती थीं।

श्रीमती जेलिया का निधन दिनांक 23 अप्रेल, 1991 को हुआ।

मैं सभी दिवंगत व्यक्तियों को अपनी ओर से और इस सदन के समस्त माननीय सदस्यों की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्माओं को शान्ति प्रदान करें और उनके शोक संतप्त परिवारजन को उनके बिछोह को सहन करने की शक्ति दें।

माननीय सदस्यगण कृपया दो मिनट मौन खड़े रहकर दिवंगत व्यक्तियों की आत्माओं की शान्ति के लिए प्रार्थना करें व श्रद्धांजलि अर्पित करें।

(माननीय सदस्यों ने दो मिनट मौन खड़े रहकर श्रद्धांजलि अर्पित की)

सूचना

विधानसभा की सदस्यता से त्यागपत्र

श्री अध्यक्ष : मुझे माननीय सदस्यों को सूचित करना है कि :

(1) श्री रामनारायण बैरवा, जो नवीं राजस्थान विधान सभा में निर्वाचन क्षेत्र निवाई, जिला टौंक, से सदस्य निर्वाचित हुये हैं, ने राजस्थान विधान सभा की सदस्यता से दिनांक 26.6.1991 से त्यागपत्र दे दिया है, जिसे स्वीकार कर लिया गया है।

(2) श्री शिवचरण माथुर, जो नवीं राजस्थान विधान सभा में निर्वाचन क्षेत्र माण्डलगढ़, जिला भीलवाड़ा से सदस्य निर्वाचित हुए हैं, ने राजस्थान विधान सभा की सदस्यता से दिनांक 29 जून, 1991 से त्यागपत्र दे दिया है, जिसे स्वीकार कर लिया गया है।

(3) श्री कुन्जी लाल मीणा, जो नवीं राजस्थान विधान सभा में निर्वाचन क्षेत्र बामनवास, जिला सवाई माधोपुर, से सदस्य निर्वाचित हुए हैं, ने राजस्थान विधानसभा की सदस्यता से दिनांक 29 जून, 1991 से त्याग पत्र दिया है, जिसे स्वीकार कर लिया गया है।

(4) श्रीमती कृष्णेन्द्र कौर, जो नवीं राजस्थान विधान सभा में निर्वाचन क्षेत्र डीग, जिला भरतपुर, से सदस्या निर्वाचित हुई है, ने राजस्थान विधान सभा की सदस्यता से 1 जुलाई 1991 से त्यागपत्र दे दिया है, जिसे स्वीकार कर लिया गया है।

राष्ट्रपति महोदय व राज्यपाल महोदय से अनुमति प्राप्त विधेयक

राष्ट्रपति महोदय व राज्यपाल महोदय द्वारा स्वीकृति प्राप्त विधेयकों के बारे में सूचना।

सचिव, राजस्थान विधान सभा।

श्री नन्दलाल छांगाणी सचिव (राजस्थान विधान सभा) : महोदय,

मैं, राजस्थान विधान सभा द्वारा गत सत्र में पारित विधेयकों का विवरण सदन की मेज पर रखता हूं जिन पर राष्ट्रपति अथवा राज्यपाल महोदय की अनुमति प्राप्त हो चुकी है :

(श्री सचिव)

(क) राष्ट्रपति महोदय से अनुमति प्राप्त विधेयक :

(1) राजस्थान वीडियो फिल्म (प्रदर्शन का विनियमन) विधेयक, 1990।

(ख) राज्यपाल महोदय से अनुमति प्राप्त विधेयक।

(1) राजस्थान भू राजस्व (संशोधन) विधेयक, 1991.

(2) राजस्थान भूमि एवं भवन कर (संशोधन) विधेयक, 1991.

(3) राजस्थान विनियोग (संख्या 1) विधेयक, 1991.

(4) राजस्थान विनियोग (संख्या 2) विधेयक, 1991.

(5) राजस्थान सहकारी सोसाइटी (संशोधन) विधेयक, 1991.

(6) राजस्थान आबकारी (संशोधन) विधेयक, 1991.

(7) राजस्थान नगर पालिका (संशोधन) विधेयक, 1991.

(8) राजस्थान विक्रय कर (संशोधन) विधेयक, 1991.

(9) राजस्थान विधान सभा (अधिकारियों तथा सदस्यों की परिलब्धियां और पेन्शन) (संशोधन) विधेयक, 1991.

(10) राजस्थान मंत्री वेतन (संशोधन) विधेयक, 1991.

सदन की मेज पर रखे गये पत्रादि

अध्यादेश

श्री अध्यक्ष : अध्यादेश।

श्री भंवरलाल शर्मा (स्वायत्त शासन मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं निम्नांकित अध्यादेश सदन की मेज पर रखता हूं :

(1) राजस्थान नगरपालिका (संशोधन) अध्यादेश, 1991 (1991 का अध्यादेश संख्या–6)

(2) जयपुर विकास प्राधिकरण (संशोधन) अध्यादेश, 1991 (1991 का अध्यादेश संख्या–7)।

(3) राजस्थान नगर सुधार (संशोधन) अध्यादेश, 1991 (1991 का अध्यादेश संख्या–8)

श्री अध्यक्ष : श्री गंगाराम चौधरी।

श्री गंगाराम चौधरी : (राजस्व मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं निम्नांकित अध्यादेश सदन की मेज पर रखता हूं :

(1) राजस्थान उपनिवेशन (संशोधन) अध्यादेश, 1991 (1991 का अध्यादेश संख्या–2)

(2) राजस्थान भू राजस्व (संशोधन) अध्यादेश, 1991 (1991 का अध्यादेश संख्या–3)।

श्री अध्यक्ष : श्री चतुर्भुज वर्मा।

श्री चतुर्भुज वर्मा : (सहकारिता मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान सहकारी सोसाइटी (द्वितीय संशोधन) अध्यादेश 1991 (1991 का अध्यादेश संख्या 4) सदन की मेज पर रखता हूं।

श्री अध्यक्ष : श्री हरलाल सिंह खर्रा।

श्री हरलाल सिंह खर्रा (पंचायत राज्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान पंचायत (संशोधन) अध्यादेश, 1991 (1991 का अध्यादेश संख्या 5) सदन की मेज पर रखता हूं।

प्रतिवेदन एवं लेखे

श्री अध्यक्ष : प्रतिवेदन एवं लेखे ।

श्री कृष्ण कुमार गोयल ।

श्री कृष्ण कुमार गोयल : (उद्योग मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं कम्पनीज अधिनियम 1956 की धारा 619 ए की उप धारा 3 के भाग (बी) के अन्तर्गत राजस्थान स्माल इन्डस्ट्रीज कार्पोरेशन लिमिटेड, जयपुर, का 29 वां वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 1989-90 सदन की मेज पर रखता हूं ।

विधायी कार्य : विधेयक का पुरःस्थापन

श्री अध्यक्ष : पुरःस्थापित किये जाने वाले विधेयक ।

श्री गंगाराम चौधरी ।

राजस्थान उपनिवेशन (संशोधन) विधेयक, 1991

श्री गंगाराम चौधरी (राजस्व मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान उप-निवेशन (संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरः स्थापित करने की आज्ञा के लिये प्रस्ताव करता हूं ।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि आज्ञा प्रदान की जाये ?

(स्वीकृत)

आज्ञा प्रदान की गई।

श्री गंगाराम चौधरी : अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान उपनिवेशन (संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरः स्थापित करता हूं ।

मैं राजस्थान उपनिवेशन (संशोधन) अध्यादेश, 1991 (1991 का अध्यादेश संख्या-2) को जारी करने के कारणों का विवरण भी सदन की मेज पर रखता हूं ।

राजस्थान भू-राजस्व (द्वितीय संशोधन) विधेयक, 1991

अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान भू-राजस्व (द्वितीय संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरः स्थापित करने की आज्ञा के लिये प्रस्ताव करता हूं ।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि आज्ञा प्रदान की जाये ?

(स्वीकृत)

आज्ञा प्रदान की गई ।

श्री गंगाराम चौधरी : अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान भू-राजस्व (द्वितीय संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरः स्थापित करता हूं ।

मैं राजस्थान भू-राजस्व (संशोधन) अध्यादेश, 1991 (1991 का अध्यादेश संख्या-3) को जारी करने के कारणों का विवरण सदन की मेज पर रखता हूं ।

राजस्थान पंचायत (संशोधन) विधेयक, 1992

श्री अध्यक्ष : श्री हरलाल सिंह खर्रा।

श्री हरलाल सिंह खर्रा (पंचायत राज मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान पंचायत (संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरः स्थापित करने की आज्ञा के लिये प्रस्ताव करता हूं।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि आज्ञा प्रदान की जाये ?

(स्वीकृत)

आज्ञा प्रदान की गई।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान पंचायत (संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरः स्थापित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान पंचायत (संशोधन) अध्यादेश, 1991 (1991 का अध्यादेश संख्या-5) को जारी करने के कारणों का विवरण भी सदन की मेज पर रखता हूं।

जयपुर विकास प्राधिकरण (संशोधन) विधेयक, 1991

श्री भंवर लाल शर्मा (प्रभारी मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं जयपुर विकास प्राधिकरण (संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरःस्थापित करने की आज्ञा के लिए प्रस्ताव करता हूं।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि जयपुर विकास प्राधिकरण (संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरः स्थापित करने की आज्ञा प्रदान की जाय ?

(स्वीकृत)

आज्ञा प्रदान की गयी।

प्रभारी मंत्री विधेयक को पुरः स्थापित भी करेंगे।

श्री भंवर लाल शर्मा : अध्यक्ष महोदय, मैं जयपुर विकास प्राधिकरण (संशोधन) विधेयक, 1991 को पुरः स्थापित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं जयपुर विकास प्राधिकरण (संशोधन) अध्यादेश, 1991 (1991 का अध्यादेश संख्या–7) को जारी करने के कारणों का विवरण भी सदन की मेज पर रखता हूं।

श्री अध्यक्ष : सदन की बैठक दिनांक 11-9-91 के प्रातः 11.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही म. प. 12 बजकर 41 मिनट पर बुधवार, दिनांक 11 सितम्बर, 1991 के प्रातः 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई)